शिव पञ्चवक्त्र पूजनम्

संङ्कलन कर्ता

डॉ. योगेश मिश्र

शिव पञ्चवक्त्र

पूजनम्

संङ्कलन कर्ता

डॉ. योगेश मिश्र

प्रकाशक

श्री पीताम्बरा श्री स्वामी शक्ति पीठ

ग्राम विजयपुरा, आगरा रोड, जयपुर (राज.)

प्रथमावृत्ति- संवत् 2060
सन् 2003
प्रतियां - 500

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मूल्य - 100.00 रुपये

मुद्रक - शिवशक्ति प्रेस प्रा. लि.
नयागांव, ग्वालियर रोड, झाँसी (उ.प्र.)
फोन नं. **2441092**

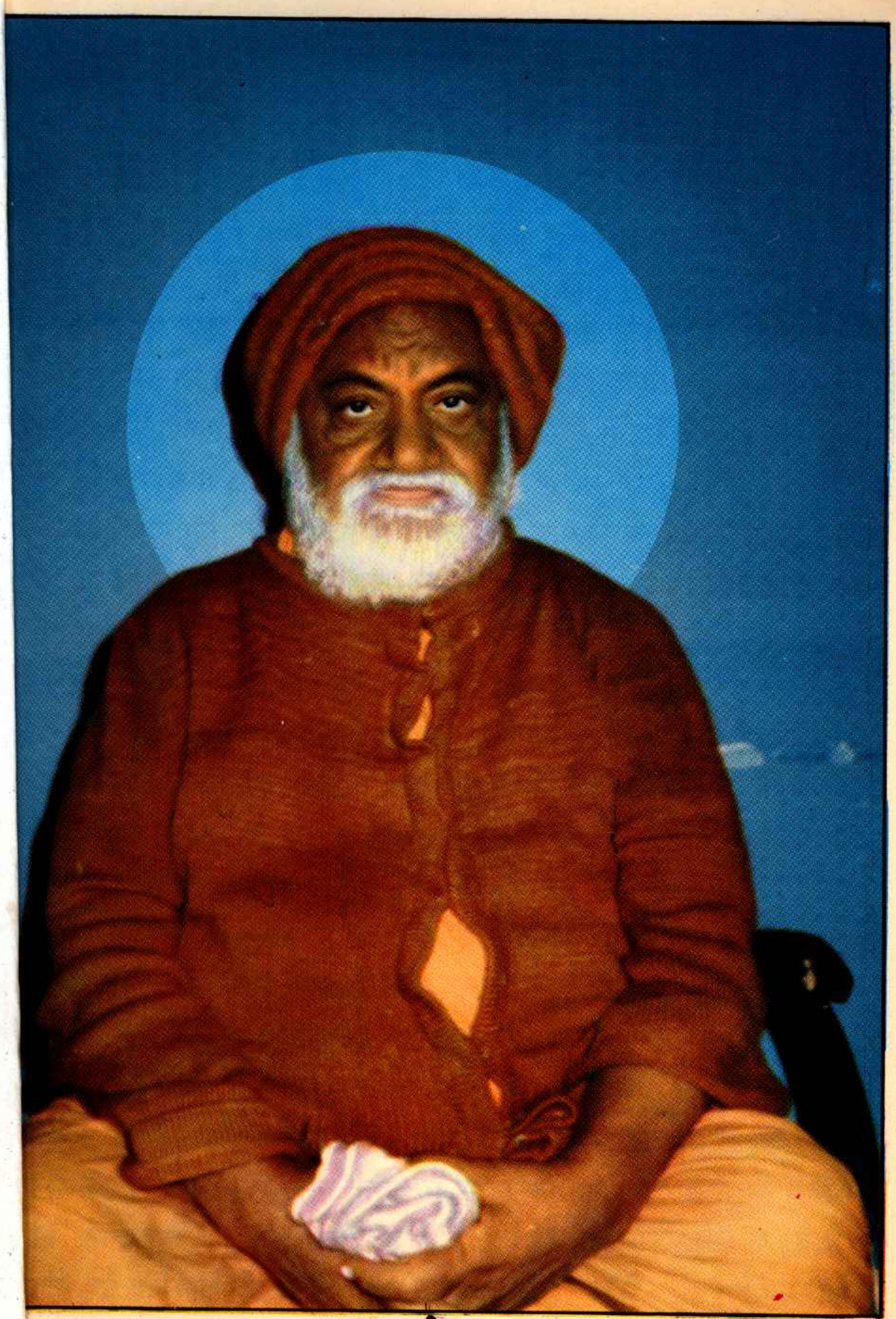

ब्रह्मलीन

श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज, वनखण्डेश्वर, दतिया (म०प्र०)

भूमिका

पञ्च वक्त्र पूजनम

आर्य जाति की प्राचीनतम धार्मिक पूजा अर्चनों में भगवान शिव का आदि काल से ही वैशिष्ट्य एवं मूर्धन्य स्थान रहा है। नारायण के श्वासानुश्वास वेद भगवान हमारे धर्म एवं सभ्यता के प्राण हैं और यही हमारी उपासना एवं कर्मकाण्ड के मूल स्त्रोत हैं। शिवोपासना की प्राचीनता अत्यन्त प्रामाणिक है और कई विद्वान यह कहने में भी नहीं चूके हैं कि शिव आदिवासियों और अनार्यों के उपास्य देव थे।

यजुर्वेदान्तर्गत रूद्राष्टाध्यायी शुक्ल एवं कृष्ण यजुर्वेद के विभाग से हमारे प्राचीन उपासनाचार्यों ने एक अमूल्य धरोहर के तौर पर हम लोगों को प्रदान की है। शिवार्चन, रूद्राष्टाध्यायी के पाठ एवं शिव के विभिन्न स्तोत्र-पाठ प्राय: सभी धार्मिक विद्वानों एवं श्रद्धालु भक्तों को माननीय एवं ज्ञातव्य है। लघुरुद्र, एकादशिनी रुद्रपाठ, महारुद्र, अतिरुद्र इत्यादि विभिन्न संख्या वाचक नाम इस रुद्रपाठ की पारायण संख्या पारायण के दिन एवं कर्त्ता ब्राह्मण संख्या के सूचक हैं। इन सब पारायणों के पूर्व प्रथम भगवान शिव का पूजन किया जाता है। मंत्र-शास्त्रान्तर्गत षडाम्नायों के क्रम मंत्र भगवान आशुतोष शिव के ही छ: मन्त्रमय मुख हैं। व्यवहार में भगवान शिव को पञ्चवक्त्र ही कहा गया है और षष्ठम् मुख का अधिकांश ने वर्णन गोपनीय रखा है। चारों दिशाओं को इंगित करते हुए चार मुख और एक आकाश की तरफ देखता हुआ पञ्चम मुख (सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष, ईशान) को कलाकारों ने अपने हस्त कौशल से पाषाण एवं अन्य विभिन्न धातुओं में दिग्दर्शन कराने में सफलता प्राप्त की है परन्तु षष्ठम मुख जो पाताल की ओर देखता हुआ है एवं जिसे कालाग्निरुद्र कहते हैं, दर्शाने की कठिनाई के कारण प्राय: अव्यक्त ही बना रहा। भगवान का यही (षष्ठम्) मुख अनुत्तराम्नाय अन्तर्गत मंत्रराशि का जनक है जो गुह्य और केवल गुरुगम्य है। अत्यन्त सारगर्भित श्री गुरु पादुका पञ्चक नामक दिव्य स्तोत्र में भी पञ्चवक्त्रों एवं षडाम्नायों का उल्लेख है-

पादुकापञ्चक स्तोत्रं पञ्चवक्त्राद् विनिर्गतम्
षडाम्नायफलं प्राप्तं प्रपञ्चे चाऽति दुर्लभम॥

(बगलामुखी रहस्यम् गुरुतत्व प्रकरणान्तर्गत पृष्ठ 120-121)

भगवान आशुतोष शिव की पूजार्चन एवं न्यास इत्यादि सामान्य रूप से प्रायः उपलब्ध हैं परन्तु पञ्चवक्त्र का विधिवत पूजन विशेष रूप से कलाओं, मुद्राओं एवं विशेष नैवेद्यों के अर्पण सहित देखने में नहीं आया है। प्रातः स्मरणीय श्री 1008 श्री स्वामी जी महाराज पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु दतिया मध्यप्रदेश की अनुपम कृपा से एक हस्तलिखित पञ्चवक्त्र पूजा पद्धति जोधपुर नगर से प्राप्त हुई। इसकी प्राचीनता ही इसकी प्रामणिकता एवं वैशिष्ट्य है जो साधकों के साधन क्रम में इसे अपनाने पर सिद्धिप्रद सिद्ध हुई है।

इस बिन्दु को ध्यान में रखते हुए जिज्ञासुओं की कामनापूर्ति हेतु यह गुरुप्रसाद वितरण के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्री गुरुचरण रज कण
योगेश चन्द मिश्र

॥ श्री गुरवे नमः॥
॥ श्री गणेशाय नमः॥

पूजा सामग्री

1. कुंकुम
2. मोली
3. पीली सरसों
4. धूप
5. अगर
6. तगर
7. रक्तचंदन
8. श्वेत चंदन
9. मेनसिर
10. गोरोचन
11. कण गुग्गुल
12. जायफल
13. जावित्रि
14. लोंग
15. डोडा
16. केसर
17. पुष्प
18. पान
19. कस्तूरी
20. कंकोल
21. जटमांसी
22. अणबीद मोती
23. सुगन्धित धूप
24. दूध
25. दही
26. शहद
27. बूरा
28. घी
29. उड़द का आटा
30. मेदा
31. बेसन
32. गेहूं का आटा
33. मावा
34. ऋतुफल
35. तुलसी शतपत्र
36. धत्तूर पुष्प
37. अर्क डोडा
38. पदमरी
39. श्वेत वस्त्र
40. रक्त वस्त्र
41. कृष्ण वस्त्र
42. पीत वस्त्र
43. नील वस्त्र
44. सुपारी
45. मुद्रा
46. नारियल

47.	टिकडिया	48.	कनेर पुष्प
49.	यज्ञोपवीत	50.	ब्राह्मण वरणार्थं
51.	ब्राह्मण भोजन	52.	आचार्य दक्षिणा
53.	पंचरत्न	54.	पंचपल्लव
55.	कलश	56.	बटकियां
57.	तिरभारणिया	58.	पत्तल
59.	दोने	60.	रुई
61.	टिपोसियां	62.	उसीरकस

अथ पूजन विधि :-

साधक महोदय प्रदोष के दिन ब्रह्म मुहूर्त में शय्या त्याग कर प्रातः- कृत्य पश्चात स्नानोपरान्त प्रातः सन्ध्या वन्दना आदि से निवृत्त होकर उपरोक्त पूजन सामग्री सहित शिव पञ्चवक्त्र के मन्दिर में जायें। पूजन सामग्री व्यवस्थित कर शिव समीप पूर्वाभिमुख कुशा आसन बिछाकर आसन गृहण करे -

शुद्ध जलेन पूजा कलशं आपूर्य स्वात्मानमभिषिञ्चयेत्-

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदाः पुनीहिमा।।
अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर शुचिः।।

त्रिः वारं आचम्यः -

ॐ ह्राँ आत्मतत्त्वाय नमः।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमः।
ॐ ह्रूँ शिव तत्त्वाय नमः।

प्राणानायम्य -

मूल मन्त्रेण, गायत्री मंत्रेण वा पूरक-कुम्भक-रेचक कुर्यात्।

शिखाबंधनम् -

ॐ उर्ध्वकेशि विरुपाक्षि मांसशोणित भोजने।

तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते।।

दिग्बन्धनार्थ सर्षपान् विकिरेत् -

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता:।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभेत्।।

स्व दक्षिण भागे–

नमस्कारं कुर्यात् (गुरु स्मरणम्) ॐ गुरुवे नम:
ॐ परम गुरुवे नम:। ॐ परमेष्ठि गुरुवे नम:
ॐ परात्पर गुरुवे नम:

स्ववामभागे (गणपति व इष्ट स्मरणम्)

ॐ गणपतये नम:। ॐ दुर्गायै नम:। ॐ क्षेत्रपालाय नम:।
ॐ योगिन्यै नम:। ॐ अस्मिन क्षेत्राधिशाय नम:।

मध्ये :- श्री पञ्च वक्त्राय नम:

भूमिं पूजयेत - आसन

ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा न: शर्म्म सप्प्रथा:।
ॐ कर्म भूम्यै नम:। सर्वोपचारार्थे - गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

विनियोग - ॐ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषि: कूर्मो
देवता सुतलं छन्द: आसने विनियोग:।।

आसन पूजनम् - पृथ्वित्वयाधृतालोका देवित्वं विष्णुना धृता:। त्वं च
धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। ॐ कूर्मासनाय नम:।
सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।।

भैरव नमस्कारम् -

तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुम्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि
श्री भैरवाय नम:

अपनी गोद में अपने दोनों हाथों को उर्ध्वमुख रखकर स्वहृदय स्थित

प्रदीप कलिकाकार हंसस्वरुप अपनी जीवात्मा को मूलाधारस्थ कुण्डलिनी के साथ सुषुम्णा मार्ग से मूलाधार - स्वाधिष्ठान - मणिपुर- अनाहत-विशुद्धि- आज्ञा आदि षट्चक्रों का भेदन करते हुए शिर में स्थित अधोमुख कमल की कर्णिका में विद्यमान परमात्मा से संयुक्त कर यह भावना करे कि वहीं पर पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश, गंध-रस-रूप-स्पर्श-शब्द, नासिका-जिह्व-नेत्र-त्वक्-श्रोत्र, वाक्-पाणि-पाद-पायु-उपस्थ, प्रकृति-मन-बुद्धि और अहंकार ये चौबीसों तत्त्व लीन हो गए।

फिर अपने बाएं नासापुट में धूम्रवर्ण वायुबीज 'यं' की कल्पना कर उसका सोलह बार जप करते हुए वायु से स्वदेह को पूर्ण कर दोनों नासापुटों को बन्द कर 'यं' का चौंसठ बार जप करते हुए कुम्भक कर अपनी बाईं कोख में पाप पुरुष का ध्यान करें।

पापपुरुष-ध्यानम्

वामकुक्षि स्थित पापपुरुषं तु कृष्ण वर्ण
ब्रह्महत्या शिरः स्कन्धम् स्वर्णस्तेय भुजद्वयम॥
सुरापान हृदायुक्तं गुरुतल्प कटिद्वयम्
तत्संसर्ग पदद्वंद्वं अंग प्रत्यंग पातकम्॥
उपपातक रोमाणं रक्तश्मश्रु विलोचनं
खड्गचर्मधरं क्रुद्धं अनादिभव संभवम्॥

इतिध्यात्वा। वामनासा पुटेन 'यं' इति वायुना सपापपुरुषं स्वदेहं शोषयित्वा। तंवायुं दक्षिणनासया विरेच्य पुनर्दक्षिणनासया 'रं' इति वायुमापूर्य स्वाधि -ष्ठानस्थ वह्निमण्डले संयोज्य।

तत्र 'रं' बीजं रक्तवर्णं स्मरन्। कुंभकेन 'रं' बीजमावर्तयन्। तदुदभूतेन महावह्निना सपापपुरुषं स्वदेहं संदह्य।

पापपुरुष भस्मना सह तं वायु वामनासया विरेच्य।

पुनर्वामया 'वं' इति वायुमापूर्य ब्रह्मरंध्रस्थ चंद्रमण्डले संयोज्य। तत्र 'वं' बीजं शुक्लवर्णं स्मरन् कुंभकेन वं बीजं आवर्तयन्। तद्निर्गतामृतधारया स्वदेहे भस्म संचिन्त्य। पुनस्तं वायुं दक्षिण नासया विरेच्य।

पुनर्दक्षिणया 'लं' इति वायुमापूर्य मूलाधारे संयोज्य। तत्र मायाबीजम् उद्यत्सूर्य समप्रभं संचिन्त्य। कुंभकेन मायाबीजमावर्तयन। तेन कर-चरणादि निखिलावयव समेत स्वदेहं विभाव्य। तं वायुं दक्षिणया विरेच्य। शिवादि क्षित्यंतानि षट्त्रिंशत्तत्वानि स्व-स्वस्थाने स्थापयेत्।

नादशक्ति, बिन्दुशक्ति, परशक्तीनां प्रणवेन स्वदेह व्याप्ति विभाव्य। ब्रह्मरंध्रस्थ परमात्मानः सकाशात् कुंडलिन्या जीवात्मानं संहृतवर्ण वर्णाधि देवता सहितम् आज्ञादि चक्रेषु तत्तद्वर्ण वर्णाधिदेवताः स्थापयन् हृदय कमलमानीय। हृदयकमले जीवात्मानं 'सोऽहं' मन्त्रेण स्थापयित्वा। कुण्डलिनी सुषुम्णामार्गेण मणिपूरकादि चक्रेषु तत्तद्वर्णावर्णाधिदेवता स्थापयन्। मूलाधारं नीत्वा तत्र तां स्थापयेत्। ततः स्वशरीरं निरस्त सकल कलुषं तेजोरूपं देवताराधान् योग्यं विभावयेत्।

॥ इति भूतशुद्धिः॥

अथ प्राण प्रतिष्ठा

ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्र ऋषिः, ऋक्यजुःसाम छन्दः, चैतन्यरूपायै प्राणशक्ति देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम् प्राण प्रतिष्ठार्थे विनियोगः।

मम् पंचवक्त्रशिवपूजांगत्वेन विनियोगं कृत्वा ऋष्यादि न्यासं कुर्यात्

प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्माविष्णु रुद्रेभ्यो ऋषिभ्यो नमः - शिरसि

ऋग्यजुःसामभ्यः छंदेभ्यो नमः - मुखे

चैतन्य रुपायै प्राणशक्त्यै देवतायै नमः - हृदि

आं बीजाय नमः - गुह्ये

ह्रीं शक्त्ये नमः - पादयो

क्रौं कीलकाय नमः - नाभौ

ॐ आं ह्रीं क्रौं अं कं खं गं घं ङं आकाश वायु अग्नि सलिल पृथिव्यात्मने आं हृदयाय नमः (अंगुष्ठाभ्यां नमः)

ॐ आं ह्रीं क्रौं इं चं छं जं झं ञं शब्द स्पर्श रूप रस गंधात्मने ईं शिरसे स्वाहा (तर्जनीभ्यां नमः)

ॐ आं ह्रीं क्रौं उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्र त्वक् चक्षुः जिह्वा घ्राणात्मने ऊं शिखायै बषट् (मध्यमाभ्यां नमः)

ॐ आं ह्रीं क्रौं एं तं थं दं धं नं वाक् पाणि पाद पायु उपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्। (अनामिकाभ्यां नमः)

ॐ आं ह्रीं क्रौं ओं पं फं बं भं मं वचन आदान विसर्गात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट। (कनिष्ठिकाभ्यां नेत्रः)

ॐ आं ह्रीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मनोबुद्धयहंकार चित्तात्मने अः अस्त्राय फट्। (करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)

इति मत्रान् अंगुष्ठादितलांतं करयोः विन्यस्य।

ततो नाभ्यादि पादद्वयाग्रांतं आं नमः

कंठादिनाभ्यंतं ह्रीं नमः

मूर्द्धादिकंठांतं क्रौं नमः

ततों हृदये-

वायव्य कोणे	यं नमः
आग्नेय कोणे	रं नमः
पूर्व दिशायाम्	लं नमः
पश्चिम दिशायाम्	वं नमः
ईशान कोणे	शं नमः
नैऋत्य कोणे	षं नमः
उत्तर दिशायाम्	सं नमः
दक्षिण दिशायाम्	हं नमः
कर्णिकायां	क्षं नमः

इति विन्यसेत्।

प्राणशक्तिध्यानम्

रक्ताध्विपोतारुण पद्मसंस्थां।
पाशांकुशाविक्षुशरां सबाणान्।।
शूलं कपालं दधतीं कराब्जैः ।
रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीं ।।

हृदि हस्तं निधाय-

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं
हौं हंसः सोऽहं मम प्राणा इह प्राणा।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः सोऽहं मम जीव इह स्थितः

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः सोऽहंमम सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

'ॐ' इति प्राण प्रतिष्ठा मंत्रम् जपित्वा निजवपु ज्योति रूपं ध्यायेत्।

इति प्राण प्रतिष्ठा विधिः।

अथांतरमातृका न्यासः

तत्र मातृकावर्णै प्राणायामत्रयं कृत्वा। तत्र स्वरैः पूरकः, काद्यैमांतः कुंभकः, याद्यै क्षान्तः रेचकः। इति मातृका प्राणायामो ज्ञेया।

अथांतरमातृका मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छंदः, मातृका सरस्वती देवताः, हलेभ्यो बीजः, स्वराः शक्तिः, अव्यक्त कीलकम् अंतरमातृका न्यासे विनियोग।

ब्रह्मणे ऋषये नमः	शिरसि
गायत्री छंदसे नमः	मुखे
मातृका सरस्वत्यै देवतायै नमः	हृदि
हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः	गुह्ये
स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः	पादयो
अव्यक्ताय कीलकाय नमः	नाभौः

इति विन्यस्य

मम शिवपूजांगत्वेन मातृकान्यासे विनियोगः।

इति कृतांजलिर्वदेत्

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं	हृदयाय नमः
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं	शिरसे स्वाहा
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं	शिखायै वषट्
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं	कवचाय हुम्
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अंः	अस्त्राय फट्

एवमेव करन्यासं कुर्यात् तद्यथा-

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं	तर्जनीभ्यां नमः
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं	मध्यमाभ्यां नमः
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः

ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

ध्यानम् -

ॐ व्योमेद्वौरेनर्ण कर्णिकमचांद्वंद्वं स्फुरत्केशरं
पत्रान्तर्गत पंचवर्ग यशल वर्णादित्रिवर्गम् क्रमात्
आशा स्वस्ति पुलांतलांगलि युजा क्षोणी पुरेणावृतं
वर्णाब्जं शिरसि स्थितं विष गदा प्रध्वंसी मृत्युंजयो।

इति ब्रह्मरन्ध्रे वर्णारविन्द वक्ष्यमाण रूपं ध्यात्वा। तन्न्यास पूर्वकं बहिर्मातृका न्यासं कुर्यात्।

तत्र मूलाधार ध्वनिं श्रुत्वा प्रबुध्वाशक्तिं कुण्डलिनि ज्वलपावक संकाशा सूक्ष्मातेज-स्वरूपिणी। मूलाधार शिरोपद्मं स्पृशंति विद्युदाकृति। तयां स्पृष्ट शिरः - पद्मादमृतौघः स्वरूपिणी निर्गता मातृकावर्णान् सुषुम्णावर्त्मना तनुम् व्यापयित्वा स्थितात्सर्वान् एवं ध्यात्वा प्रविन्यसेत्।

इति सूक्ष्मरूपं वर्णतनुं ध्यात्वा।

कण्ठे विशुद्धि चक्रे षोडशदले कमलमुर्ध्वमुखं ध्यात्वा, पूर्वादिप्रादक्षिण्येन्-

ॐ अं नमः
ॐ आं नमः
ॐ इं नमः
ॐ ईं नमः
ॐ उं नमः
ॐ ऊं नमः
ॐ ऋं नमः
ॐ ॠं नमः
ॐ ऌं नमः
ॐ ॡं नमः
ॐ एं नमः
ॐ ऐं नमः
ॐ ओं नमः
ॐ औं नमः

ॐ अं नमः

ॐ अः नमः

ततो हृदये द्वादशदल कमलं ध्यात्वा, तद्दलेषु प्रादक्षिण्येन

ॐ कं नमः

ॐ खं नमः

ॐ गं नमः

ॐ घं नमः

ॐ ङं नमः

ॐ चं नमः

ॐ छं नमः

ॐ जं नमः

ॐ झं नमः

ॐ ञं नमः

ॐ टं नमः

ॐ ठं नमः

ततो नाभिमंडले दशदल कमलंध्यात्वा, तद्दलेषु प्रागादि प्रादक्षिण्येन–

ॐ डं नमः

ॐ ढं नमः

ॐ णं नमः

ॐ तं नमः

ॐ थं नमः

ॐ दं नमः

ॐ धं नमः

ॐ नं नमः

ॐ पं नमः

ॐ फं नमः

ततो लिंगमूले षड्दल कमलं ध्यात्वा, तद्दलेषु प्रागादि प्रादक्षिण्येन–

ॐ बं नमः

ॐ भं नमः

ॐ मं नमः

ॐ यं नमः

ॐ रं नमः

ॐ लं नमः

ततो गुह्यस्थाने चतुर्दल कमलं ध्यात्वा, तद्दलेषु प्रागादि प्रादक्षिण्येन–

ॐ वं नमः

ॐ शं नमः

ॐ षं नमः

ॐ सं नमः

ततो भ्रूमध्ये द्विदल कमलं ध्यात्वा तद्दलयोः,

ॐ हं नमः

ॐ क्षं नमः

इत्यंतरमातृका न्यासो मनसे कार्यः। पुष्पै देवता मूर्तौ। अंगुष्ठानामिकाभ्यां स्वदेहे। षडंग न्यासः व्यतिरिक्तेष्वियं व्यवस्था। मनसा मूलाधारादि चक्रेषु तत्र करस्पर्शासंभवात्।

अथ बहिर्मातृका न्यासः

बहिर्मातृका ध्यानम्

पंचाशद्वर्ण भेदैर्विहित वदन दोपादयुक्कक्षि वक्षो
देशांभास्वत् कपदृकलित शशिकलामिंदुकुंदावदातां
अक्षस्रक्कुंभ चिंतालिखित वरकरां त्रीक्षणां पद्म संस्था
मच्छाकल्पामतुच्छ स्तनभरां भारती त्वां नमामि।।

इति दक्षिणोर्ध्व करमारभ्य दक्षाधः करपर्यन्तं आयुध ध्यानं। ततः पूर्वोक्त ब्रह्मरंध्रस्थ चरणारविन्दे मातृका सरस्वतीं ध्यात्वा–

ॐ अं नमः शिरसि

ॐ आं नमः मुखवृते

ॐ इं नम:	दक्षिण नेत्रे
ॐ ईं नम:	वामनेत्रे
ॐ उं नम:	दक्षिण कर्णे
ॐ ऊं नम:	वाम कर्णे
ॐ ऋं नम:	दक्षिण नासापुटे
ॐ ॠं नम:	वाम नासापुटे
ॐ लृं नम:	दक्षिण गंडे
ॐ ॡं नम:	वाम गंडे
ॐ एं नम:	उर्ध्वोष्ठे
ॐ ऐं नम:	अधरोष्ठे
ॐ ओं नम:	उर्ध्वदंत पंक्तौ
ॐ औं नम:	अधोदंत पंक्तौ
ॐ अं नम:	तालुमूले
ॐ अ: नम:	जिह्वाग्रे
ॐ कं नम:	दक्षिण बाहुमूले
ॐ खं नम:	दक्ष कूर्परे
ॐ गं नम:	दक्ष मणिबंधे
ॐ घं नम:	दक्ष करांगुलिमूले
ॐ ङं नम:	दक्ष करांगुल्यग्रे
ॐ चं नम:	वामबाहुमूले
ॐ छं नम:	वाम कूर्परे
ॐ जं नम:	वाम मणिबंधे
ॐ झं नम:	वाम करांगुलिमूले
ॐ ञं नम:	वाम करांगुल्यग्रे
ॐ टं नम:	दक्ष पादमूले
ॐ ठं नम:	दक्ष जानुनि
ॐ डं नम:	दक्ष गुल्फे
ॐ ढं नम:	दक्ष पादांगुलिमूले

ॐ णं नमः	दक्ष पादांगुल्यग्रे
ॐ तं नमः	वाम पादमूले
ॐ थं नमः	वाम जानुनि
ॐ दं नमः	वाम गुल्फे
ॐ धं नमः	वाम पादांगुलिमूले
ॐ नं नमः	वाम पादांगुल्यग्रे
ॐ पं नमः	दक्ष पार्श्वे
ॐ फं नमः	वाम पार्श्वे
ॐ बं नमः	पृष्ठे
ॐ भं नमः	नाभौ
ॐ मं नमः	जठरे
ॐ यं नमः	हृदये
ॐ रं नमः	दक्षिणांसे
ॐ लं नमः	ककुदि
ॐ वं नमः	वामांसे
ॐ शं नमः	हृदयादि दक्षकराग्रपर्यन्तं
ॐ षं नमः	हृदयादि वामकराग्र पर्यन्तं
ॐ सं नमः	हृदयादि दक्षपादांगुल्यन्तं
ॐ हं नमः	हृदयादि वामपादांगुल्यन्तं
ॐ लं नमः	हृदयादि नाभ्यंतम्
ॐ क्षं नमः	हृदयादि मूर्द्धान्तम्

अथ मूलमंत्रे प्राणायाम त्रयं कृत्वा। यथा, गुदमेढ्रयोरंतरालं वामपादेन आपीडा तदुपरि दक्षिणपादं दृढं स्थापयित्वा मूलाधारस्थ अनलकुंडलिन्या ब्रह्मरंध्रगमनात्। ब्रह्मरंध्रस्थ अमृतकुडलिन्या हृदिपातनात्, हृदि अर्ककुंडलिन्या प्रबोधनात् प्राणायाम क्रमोज्ञेय। तत्र बद्धपद्मासनो ऋजुकायः मूलमंत्रेण पूरककुंभकेन हृदि देवं ध्यायन्, रेचकेन शनैः-शनैः तं वायुं त्यजेत्।

इत्थं प्राणायामत्रयं कृत्वा योगपीठ न्यासं कुर्यात्-

मूलाधारे	मंडूकाय नमः
स्वाधिष्ठाने	कालाग्निरूद्राय नमः
मणिपूरे	मूलप्रकृत्यै नमः
हृदये	आधारशक्त्यै नमः
	कूर्माय नमः
	अनन्ताय नमः
	वाराहाय नमः
	पृथिव्यै नमः
	सुधार्णवाय नमः
	रत्नद्वीपाय नमः
	स्वर्ण पर्वताय नमः
	नन्दनोद्यानाय नमः
	कल्पवृक्षेभ्यो नमः
	विचित्र रत्न भूम्यै नमः
	स्वर्ण वेदिकायै नमः
	रत्नसिंहासनाय नमः

(इत्येतत् सर्वं तत्तत्स्थाने भावनया विन्यस्य। स्वशरीरं अंसोरूद्वय कल्पित पाद चतुष्टयं, मुखनाभिपार्श्वद्वय कल्पित गात्र चतुष्टयं।)

दक्षिणांसे	धर्माय नमः
वामांसे	ज्ञानाय नमः
वामोरौ	वैराग्याय नमः
दक्षोरौ	ऐश्वर्याय नमः
मुखे	अधर्माय नमः
वाम पार्श्वे	अज्ञानाय नमः
नाभौ	अवैराग्याय नमः

दक्षपार्श्वे   अनैश्वर्याय नमः

इति विन्यस्य, पुनः

हृदये   मायायै नमः

विद्यायै नमः

(इति मायाविद्या ओतप्रोत रूपे विचिंत्य,

तदुपरि सिंहासन मध्ये--)

अनन्ताय नमः

पद्माय नमः

आनंदकंदाय नमः

संविन्नालाय नमः

प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः

विकारमय केशरेभ्यो नमः

पंचाशद्वर्ण बीजाढ्य सर्वतत्त्वरूपा कर्णिकायै नमः

अं अर्कमंडलाय नमः

उं सोम मंडलाय नमः

मं वह्निमंडलाय नमः

सं प्रबोधात्मने सत्वाय नमः

रं प्रवृत्यात्मने रजसे नमः

तं मोहात्मने तमसे नमः

आं आत्मने नमः

अं अंतरात्मने नमः

पं परमात्मने नमः

ह्रीं ज्ञानात्मने नमः

सिंहासनस्य चतुर्दिक्षु मध्ये च-

ज्ञानतत्त्वात्मने नमः

मायातत्त्वात्मने नमः

कलातत्त्वात्मने नमः
विद्या तत्त्वात्मने नमः
पर तत्त्वात्मने नमः

इति विन्यस्य -

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योग पीठात्मने नमः

इति मूर्द्धादिपादान्तं व्यापकं न्यसेत्।

इतियोग पीठ-न्यास

अथ मूलमंत्र न्यासः, - (यथा शिव पंचाक्षर मंत्रस्य वामदेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री साम्बसदाशिव देवता, ॐ बीजं, नमः शक्ति, शिवाय इति कीलकं, मम शिव पूजांगत्वेन न्यासे विनियोगः)

वामदेवाय ऋषये नमः	शिरसि
अनुष्टुप् छन्दसे नमः	मुखे
श्री साम्बसदाशिव देवताय नमः	हृदये
ॐ बीजाय नमः	गुह्ये
नमः शक्त्यै नमः	पादयो
शिवाय कीलकाय नमः	सर्वांगे

अथ षडंग न्यास

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः
ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

एवमेव हृदयादि, तद्यथा-

ॐ ॐ हृदयाय नमः

ॐ नं शिरसे स्वाहा

ॐ मं शिखायै वषट्

ॐ शिं कवचाय हुम्

ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ यं अस्त्राय फट्

<u>अथ पंचब्रह्म न्यासः</u>

ॐ सद्योजाताय नमः	पादयो
वामदेवाय नमः	गुह्ये
अघोराय नमः	हृदये
तत्पुरुषाय नमः	मुखे
ईशानाय नमः	ब्रह्मरन्ध्रे

अथ रूद्रन्यास

मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमि
मन्तंनोत्वरिष्टंयज्ञं समिमन्दधातु ॥ विश्वे
देवासऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ॥

ॐ हृदयायनमः

ॐ अबोध्यग्निः समिधाज
नानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम् । यह्वाऽइ
वप्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रतेनाकम च्छ ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥

ॐ मूर्द्धानन्दि
वोऽअरतिम्पृथिव्याव्वैश्वानरमृतऽआजातमु
ग्निम् ॥ कविह्व सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना
पात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥

ॐ शिखायै वषट्॥

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोम स्त्वा
राजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणास्तेकृ
णोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ॥

ॐ कवचाय हुम् ॥

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो
व्विश्वतोबाहुरुतव्विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्या
न्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः ।

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥

ॐ मानस्तोकेत
नयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरि
षः ॥मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः
सदमित्त्वाहवामहे ॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो
निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि
विश्वा नावेव सिन्धुम् दुरिताऽत्यग्निः।।

परितो अग्निप्राकारं संचिन्त्य

यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापका
शिनी ॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभि
चाकशीहि ॥ शिखायां

अस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षेभवाऽअधि ॥ तेषा
ꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ - शिरसि

असंख्यातासहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्याम्॥
तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ - ललाटे

हँ ᳚ सः शुचिसद् वसुरन्तरिक्षसद् होता
वेदिषद् तिथिर्दुरोणसद् नृषद् वरसद्
ऋतसद् व्योमसद् अब्जा गोजा ऋतजा
अद्रिजा ऋतं बृहत् ।

- भ्रुवौ

त्र्यम्ब
कंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुक
मिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्र्य
म्बकंयजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥उर्व्वारुक
मिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः ॥ द्विनेत्रे

ॐ अग्निर्ज्ज्योति ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।
सूर्य्योज्योति ज्योतिः सूर्य्योः स्वाहा ।।
अग्निर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ।।
सूर्य्योर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ।।
ज्योतिः सूर्य्योः सूर्य्योज्ज्योतिः स्वाहा ।।
- तृतीय नेत्रे

नमुं स्रुत्याय चुपत्थ्यायचुन मुं काट्याय चुनीप्प्याय चुनमुं कुल्ल्याय चस रुस्याय चुनमो नादेयाय चव्वैशुन्ताय चुनमुं कू प्प्याय ॥ - कर्णयो

मा नस्तोके तनये मानुऽआयुषि मानो गोषु मानो ऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानोव्वीरान्रुद्र भामिनोव्वधी र्हविष्मन्तुः सदुमित्त्वा हवामहे ॥ - नासिकयो

अवुतत्य धनुष्ट्वं ःसहस्राक्षुशतेषुधे ॥ निशीर्य्य शुल्ल्यानाम्मुखा शिवोनः सुमना भव ॥ - मुखे

नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः ॥ - ग्रीवायां

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवंः रुद्राऽउपश्रिताः ॥ तेषांः सहस्रयोजनेवुधन्वानि तन्मसि

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्वाऽअधः क्षमाचराः ॥ तेषांः सहस्रयोजनेवुधन्वानि तन्मसि ॥ - कण्ठे

न

मस्तुऽआयुधायानाततायधृष्ष्णवे॥उभाब्भ्या
मुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्वने ॥१४॥ - बाह्यो:

येतीर्थानि प्प्रचरन्ति
सृकाहस्तानिषङ्गिण: ॥ तेषाᳯसहस्रयोजने
वधन्वानितन्मसि॥ - हस्तयो:

नम:पर्णायचपर्णशदायचनमऽउद्गुरमाणा
यचाभिग्घ्नतेचनमऽआखिदतेचप्प्राखिदतेच
नमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्चवोनमोनमोवꣳकि
रिकेब्भ्योदेवानाᳯहृदयेब्भ्योनमोविचिन्वत्के
ब्भ्योनमोविक्षिणत्केब्भ्योनमऽआनिर्हतेभ्य: - हृदये

नमो
गणेब्भ्योगणपतिब्भ्यश्चवोनमोनमोव्रातेब्भ्यो
व्रातपतिब्भ्यश्चवोनमोनमोगृत्त्सेब्भ्योगृत्त्सप
तिब्भ्यश्चवोनमोनमोविरूपेब्भ्योविश्वरूपे
ब्भ्यश्चवोनमोनमꣳसेनाब्भ्यꣳ ॥ - पृष्ठे

नमः॒शङ्ग॒वे च॑पशु॒पत॑ये॒चु॒नम॑ऽउ॒ग्राय॑चभी॒मायं॑चु॒नमो॑ऽग्रेवु॒धाय॑चदूरेवु॒धाय॑च नमो॑हु॒न्त्रे चुहनी॑यसेचु॒नमो॑वृ॒क्षेभ्यो॒हरि॑केशेभ्यो॒नम॑स्ता॒राय॑॥ दक्षिणकुक्षौ

विज्यन्धनुः॒कप॒र्दिनो॒विश॑ल्ल्यो॒बाण॑वाँ२॥ऽउ॒त ॥ अनैश॒न्नस्य॒याऽइष॑वऽआ॒भुर॑स्यनिषु॒ङ्गधिः ॥ - वामकुक्षौ

22

नमो॒हि॒र॑ण्यबाहवे॒सेना॒न्ये॑दि॒शाञ्च॒पत॑ये॒नमो॒नमो॑वृ॒क्षेभ्यो॒हरि॑केशेभ्यः प॒शू॒नाम्पत॑ये॒नमो॒नमः॑श॒ष्पिञ्ज॑रायु॒त्त्विषी॑मतेपथी॒नाम्पत॑ये॒नमो॒नमो॒हरि॑केशायोपवी॒तिने॑पु॒ष्टाना॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॑ब॒भ्लु॒शाय॑॥ पार्श्वयोः

ॐ हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे भूतस्यजातः
पतिरेकऽसीत्। सदाधार पृथिवींद्यामुतेमां
कस्मै देवाय हविषा व्विधेम्म।। - नाभौ

मीढुष्टम॒शिव॑तमशि॒वोनः॑सु॒मना॑भव॥ प॒रमे॑वृ॒क्षऽआयु॑धन्नि॒धाय॒कृत्तिं॒वसा॑नुऽआचर॒पिना॑कु॒म्बिभ्र॒दाग॑हि ॥ - कट्यां

येभूतानामधिपतयोविशि
खासंःकपुर्दिनंः ॥ तेषांꣳसहस्रयोजनेवध
न्वानितन्मसि ॥५६॥ - गुह्ये

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मध्न्या इन्द्राय भागं प्रजापतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् मोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून पाहि। - वृषणयोः

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहानि वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्याग्नि। - अपाने

मानो
महान्तंमुतमानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुत
मानऽउक्षितम् ॥ मानोवधीःपितरम्मोतमात
रम्मानंःप्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ॥ - ऊर्वो

एषते रुद्र भागःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जु - जानवोः
षस्वस्वाहैषतेरुद्र भागऽआखुस्तेपशुः ॥

नमोज्ज्येष्ठा
य चकनिष्ठायचनमःपूर्वजायचापरजायचन
मोमध्यमायचापगल्भायचनमोजघन्यायच
बुध्न्यायचनमःसोभ्याय॥ - जंघायां

नमोह्रस्वायच

वामनायचनमोबृहतेचवर्षीयसेचनमोवृद्धाय
चसवृधेचनमोग्ग्र्यायचप्प्रथमायचनमऽआशवे

- गुल्फयोः

येपथाम्पथिरक्षयऽऐल
बृदाऽआयुर्य्युधः ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेवध
न्वानितन्मसि ॥

- पादयोः

अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथ
मोदैव्योभिषक् ॥ अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वा
श्चयातुधान्योधराचीः परासुव ॥

- कवचं

नमोबिल्मिने
चकवचिनेचनमोवर्म्मिणेचवरूथिनेचनमः
श्रुतायचश्रुतसेनायचनमो दुन्दुभ्यायचाहन
न्यायचनमोधृष्णवे ॥ ३५ ॥

- उपकवचं

नमोस्तुनील
ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्यस
त्वानोहन्तेभ्योकरन्नमः ॥

- त्रिनेत्रं

प्रमुञ्चधन्व
नुस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ॥ याश्चतेहस्तऽइष
वः परातांभगवोवप ॥ - अस्त्रं

विकि
रिद्रविलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः ॥ यास्ते
सहस्रहेतयोन्यमस्मन्निवपन्तुताः ॥ - खड्गं

विज्ज्यन्धनुः कप
र्दिनोव्विशल्ल्योबाणवाँ२॥ऽउत ॥ अनेशन्न
स्ययाऽइषवआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥ वामकुक्षौ

यत्रबाणाःसम्पतन्तिकुमा
राव्विशिखाऽइव॥तन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिरदितिः
शर्म्मयच्छतुव्विश्वाहाशर्म्मयच्छतु ॥ - बाणं

।यऽएतावन्तश्चभूयाᳬ
सश्चदिशोरुद्राव्वितस्थिरे॥तेषाᳬसहस्रयोजने
वधन्न्वानितन्न्मसि॥ - दिग्बन्धः

इति रुद्र अंगन्यास

पुनर्षडङ्ग न्यासं कुर्यात्, तद्यथा -

''शिवसंकल्पं हृदयं सूक्तं स्यात् पौरुषं शिरः।
प्राहुर्नारायणीयं च शिखा स्याच्चोतराभिधम्॥
आशुः शिशान कवचं नेत्रं विभ्राड्बृहत् स्मृतम्।
शतरुद्रियमस्त्रं स्यात् षडङ्ग क्रम ईरितः ॥''

आग्रोक्त षडङ्ग न्यास क्रम उक्त मंत्रानुसारः।

ॐ यज्जाग्ग्रंतोदूरमुदैतिदैवुन्तदुसुप्प्त
स्यतथैवैति ॥ दूरङ्गमञ्ज्योतिपाञ्ज्योतिरेक
न्तन्न्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ५ ॥ येनक
र्म्माण्यपसोमनीपिणोयज्ञेकृण्वन्तिविदथेषु
धीरांः॥ यदपूर्वंय्यक्षमन्तः प्रजानान्तन्न्मेम

नः शिवसङ्कल्पमस्तु॥६॥यत्प्रज्ञानमुतचेतो
धृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्रजासु ॥ यस्मा
न्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्रियतेतन्मेमनः शिवस
ङ्कल्पमस्तु ॥७॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्य
त्परिगृहीतममृतेनसर्वम् ॥ येनयज्ञस्तायतेस
प्तहोतातन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥८॥य
स्मिन्नृचः सामयजूंषियस्मिन्प्रतिष्ठिता

रथनाभाविवाराः ॥ यस्मिंश्चित्तꣳसर्वमोतं
प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥९॥
सुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशु
भिर्वाजिनऽइव ॥ हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठ
न्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु

हृदयाय नमः

॥१॥ॐ॥सहस्रशी
र्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳस

व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽए
वेदꣳ सर्व्वुंय्यद्भूतंय्यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्त्व
स्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥ २॥ एतावानस्य
महिमातोज्ज्यायांश्चपूरुषः ॥ पादोस्यव्विश्वाभू
तानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽ
उदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोव्विष्व
ङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ४ ततोव्विराड

जायतव्विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्य
रिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥५॥ तस्माद्यज्ञा
त्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशूंस्तांश्चक्रे
वायव्यानारण्याग्राम्म्याश्चये ॥ ६ ॥ तस्माद्य
ज्ञात्सर्व्वहुतऋचः सामानिजज्ञिरे ॥ छन्दाꣳ
सिजज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥ ७ ॥
तस्म्मादश्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः ॥

गावोहजज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताऽअजावय÷
॥ ८॥ तंस्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्र
तः ॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्चये
॥ ६ ॥ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन्॥
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्ये
ते॥१०॥ ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्य÷
कृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्य÷पद्भ्याᳪशूद्रोऽ

अजायत ॥११॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः
सूर्य्योऽअजायत ॥ श्श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्चमु
खादग्निरजायत॥ १२ ॥ नाभ्याऽआसीदन्त
रिक्षᳪशीष्ष्र्णोद्यौःसमवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमि
र्दिशःश्रोत्रात्तथालोकाँ २॥ ऽअकल्पयन्
॥ १३॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ॥
वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मःशरद्धविः

॥ १४ ॥ सुप्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्तसमि
धः कृताः ॥ देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽअवध्न
न्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवा
स्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्म
हिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाध्याः सन्तिदेवाः

शिरसे स्वाहा

ॐ॥ आशुः शिशानोवृषभोन
भीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्द
नोनिमिषऽएकवीरः शतꣳसेनाऽअजयत्साक
मिन्द्रः ॥ १ ॥ सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणजिष्णु
नायुत्कारेणदुश्च्यवनेनधृष्णुना ॥ तदिन्द्रेण
जयततत्सहध्वंयुधोनरऽइषुहस्तेनवृष्णा
॥ २ ॥ सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳस्रष्टा

सयुधऽइन्द्रोगणेन ॥ सꣳसृष्टजित्सोमपाबाहु
शर्द्ध्युग्रधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥ बृह
स्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्राँ २॥ ऽअपबा
धमानः ॥ प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणोयुधाजय
न्नस्म्माकमेद्ध्यवितारथानाम् ॥ ४ ॥ बलविज्ञा
यस्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजीसहमानऽउ
ग्रः ॥ अभिवीरोअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्र

रथमातिष्ठगोवित् ॥ ५ ॥ गोत्राभिदंङ्गोविदं्व
ज्र्रबाहुञ्जयन्तमज्ज्मंप्प्रमृणान्तमोजसा ॥ इ
मᳪसंजाताऽअनुवीरयद्ध्वमिन्द्रᳪसखायोऽअ
नुसᳪरंभद्ध्वम् ॥ ६ ॥ अभिगोत्राणिसहसागाह
मानोदयोव्वीरःशतमंन्युरिन्द्रः ॥ दुश्च्च्यवनः
पृतनाषाडंयुध्योस्म्माकᳪसेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु
॥ ७ ॥ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणाय

ज्ञःपुरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जती
नाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम् ॥८॥ इन्द्रस्य
वृष्ष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽआदित्यानाम्मरुताᳪ
शर्द्धऽउग्ग्रम् ॥ महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घो
षोदेवानाञ्जयतामुदस्त्थात् ॥ ९ ॥ उद्धर्षयमघ
वन्नायुधान्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाᳪसि ॥
उद्वृत्रहन्व्वाजिनांव्वाजिनान्युद्रथानाञ्जयतांय्य

न्तुघोपाहं ॥१०॥ अस्माकमिन्द्रहंसमृतेषुद्ध
जेष्ष्वस्माकंय्याऽइषवस्ताजयन्तु॥ अस्माकं
वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्माँ२॥उदेवाऽअवताहवेषु
॥११॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणा
ङ्गान्यप्प्वेपरेहि॥ अभिप्प्रेहिनिर्द्दहहृत्सुशोकैर
न्धेनामित्रास्तमसासचन्ताम्॥१२॥अवसृष्टा
परापतशरव्व्येब्रह्मसहंशिते ॥ गच्छामित्रान्प्र

पद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषहं॥१३॥प्रेताजय
तानरऽइन्द्रोवहंशर्म्मयच्छतु॥ उग्ग्रावः सन्तु
बाहवोनाधृष्ष्यायथासथ॥१४॥असौयासेना
मरुतहंपरेषामब्भ्यैतिनऽओजसास्प्पर्द्धमाना॥
ताङ्गूहततमसापव्रतेनयथामीऽअन्न्योऽअन्न्य
न्नजानन्॥१५॥ यत्रबाणाःसम्पतन्तिकुमा
राविशिखाऽइव॥तन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पतिरदितिहं
शर्म्मयच्छतुविश्श्वाहाशर्म्मयच्छतु॥१६॥ म
म्र्माणितेवर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृ
तेनानुवस्ताम्॥ उरोर्व्वरीयोवरुणस्तेकृणोतुज
यन्तन्त्वानुदेवामदन्तु॥१७॥

शिखायै वषट्

अद्भ्यःसम्भृतःपृथिव्यैरसाच्चविश्वक
र्म्मणःसमवर्त्तताग्रे ॥ तस्यत्वष्टाविदधद्रूपमे

तितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्रे ॥१७॥ वेदा
हमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसःपर
स्तात् ॥ तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःप
न्थाविद्यतेऽयनाय ॥१८॥ प्रजापतिश्चरतिगर्भे
ऽअन्तरजायमानोबहुधाविजायते ॥ तस्ययो
निम्परिपश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हतस्थुर्भुवना
निविश्वा ॥ १९ ॥ योदेवेभ्यऽआतपतियोदे

वानाम्पुरोहितः ॥ पूर्व्वोयोदेवेभ्योजातोनमो
रुचायब्राह्मये ॥ २० ॥ रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदे
वाऽअग्रेतदब्रुवन् ॥ यस्त्वैवम्ब्राह्मणोविद्यात्तस्य
देवाऽअसन्वशे ॥ २१ ॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चप
त्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौ
व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलो
कम्मऽइषाण ॥ २२ ॥

कवचाय हुम्

॥ ॐ ॥ विभ्राड्बृहत्पिब
तुसोम्म्यम्मद्धायुर्द्दधद्यज्ञपंतावविंहुतम् ॥ वा
तजूतोयोऽअभिरक्षतित्त्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरु

धाविराजति ॥ १ ॥ उदुत्त्यञ्जातवेदसन्देवंवह
न्तिकेतवः ॥ दृशेविश्वायसूर्य्यम् ॥ २॥ येना
पावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ २॥ ऽअनु ॥ त्वं
वरुणपश्यसि ॥ ३ ॥ देव्यावद्ध्वर्यूऽआगतᳬरथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञᳬसमञ्जाथे ॥ तम्प्र
त्नथाऽयंवेनश्चित्रन्देवानाम् ॥ ४ ॥ तम्प्रत्नथा
पूर्वथाविश्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदᳪस्वर्वि
दम् ॥ प्रतीचीनंवृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्त
मनुयासुवर्द्धसे ॥ ५ ॥ अयंवेनश्चोदयत्पृश्निग
र्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोविमाने ॥ इममपाᳪ
सङ्गमेसूर्य्यस्य शिशुन्नविप्रामतिभीरिहन्ति
॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य
व्वरुणस्याग्ग्नेः ॥ आप्राद्यावापृथिवीऽअन्त
रिक्षᳬसूर्य्यऽआत्त्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ७ ॥

आनऽइडाभिर्विदथेसुशास्तिविश्वानरःसवि
तादेवऽएतु ॥ अपियथायुवानोमत्सथानोवि
श्वञ्जगदभिपित्वेमनीषा ॥८॥ यदद्यकच्चवृत्र
हन्नुदगाऽअभिसूर्य्य॥ सर्वन्तदिन्द्रतेवशे॥९॥
तरणिर्विश्वदर्शतोज्योतिष्कृदसिसूर्य ॥ वि
श्वमाभासिरोचनम ॥१०॥ तत्सूर्यस्यदेवत्व
न्तन्महित्वम्मध्याकर्त्तोर्विततःसञ्जभार ॥य

देदयुक्तहरितःसधस्थादाद्रात्रीवासस्तनुते
सिमस्मै ॥ ११ ॥ तन्मित्रस्यवरुणस्याभिच
क्षेसूर्योरूपङ्कृणुतेद्योरुपस्थे ॥ अनन्तम
न्यद्रुशदस्यपाजःकृष्णमन्यद्धरितःसम्भर
न्ति ॥ १२॥ बण्महाँ२॥असिसूर्य्यबडादित्य
महाँ२॥ऽअसि॥ महस्तेसतोमहिमापनस्यते
द्धादेवमहाँ२॥ऽअसि ॥१३॥ बट्सूर्य्यश्रवमहाँ

२॥ऽअसिसुत्रादेवमहाँ२॥ऽअसि॥ मह्नादेवा
नामसुर्य्यं÷पुरोहितोव्विभुज्योतिरदाब्भ्यम्
॥१४॥ श्रायन्तऽऽइवसूर्य्यंविश्वेदिन्द्रस्यभक्त
त॥ व्वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्प्रतिभाग
न्नदीधिम ॥ १५ ॥ अद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्य
निरङ्हसंपिपृतानिरवद्यात् ॥ तन्नोमित्रोव्व
रुणोमामहन्तामदितिंसिन्धु÷पृथिवीऽउत

द्यौः ॥ १६ ॥ आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवे
शयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेना
देवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ १७॥

नेत्रत्रयायवौषट्

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्तेरुद्रम
न्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ बाहुब्भ्यामुततेन
मः ॥ १ ॥ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापका
शिनी ॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभि

चाकशीहि ॥ २॥ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभ
र्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिᳬसीः
पुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥ शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशा
च्छावदामसि॥यथानःसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मᳬ
सुमनाऽअसत् ॥४॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथ
मोदैव्योभिषक् ॥ अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वा
श्चयातुधान्योधराचीः परासुव ॥ ५ ॥ असौय

स्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः ॥ येचैं
नᳬरुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाᳬ
हेडऽईमहे ॥ ६ ॥ असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवो
विलोहितः॥उतैनंगोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहा
र्य्यःसदृष्टोमृडयातिनः ॥ ७॥ नमोस्तुनील
ग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्यस
त्वानोहन्तेब्भ्योकरन्नमः ॥ ८ ॥ प्रमुञ्चधन्व

नुस्त्वमुभयोरात्त्न्योर्ज्ज्याम् ॥ याश्चतेहस्तऽइष
वुः परताभगवोव्वप ॥ ९ ॥ व्विज्ज्यन्धनुः कप
र्द्दिनोव्विशल्ल्योबाणवाँ२॥ऽउत ॥ अनेशन्न
स्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥ १० ॥ या
ते हेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तयास्म्मा
न्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज ॥ ११ ॥ परितेध
न्वनोहेतिरस्मान्वृणक्तुविश्वतः ॥ अथोयऽइ

षुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम् ॥ १२ ॥ अवत
त्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशु
ल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव ॥ १३ ॥ न
मस्तऽआयुधायानाततायधृष्ण्णवे॥उभाब्भ्या
मुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने ॥ १४ ॥ मानो
महान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुत
मानऽउक्षितम् ॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमात

रम्मानः प्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्ररीरिषः ॥१५॥ मा
नस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानो
ऽअश्श्वेषुरीरिषः ॥ मानोव्वीरान्रुद्द्रभामिनोव्वधी
र्हविष्ष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे॥ १६॥ नमोहि
रण्ण्यबाहवे सेनान्न्येदिशाञ्चपतयेनमोनमोव्वृक्षे
ब्भ्योहरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतयेनमोनमः शष्
पिञ्जराय त्त्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमोनमो

हरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतयेनमोनमोब
भ्लुशाय॥ १७॥नमोबभ्लुशायव्याधिनेन्नानाम्
पतयेनमोनमोभवस्यहेत्त्यैजगताम्पतयेनमो
नमोरुद्द्रायाततायिनेक्क्षेत्राणाम्पतयेनमोन
मः सूतायाहन्त्यैव्वनानाम्पतयेनमोनमोरोहि
ताय॥ १८॥नमोरोहिताय स्थपतयेव्वृक्षाणाम्प
तयेनमोनमोभुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीना

म्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणा
म्पतये नमो नम ऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्ती
नाम्पतये नमो नमः कृत्स्नायतया ॥ १९ ॥ नमः
कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमो नमः स
हमानाय निव्याधिन ऽआव्याधिनीनाम्पतये न
मो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये न
मो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमो

नमो वञ्चते ॥ २० ॥ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायू
नाम्पतये नमो नमो निषङ्गिण ऽइषुधिमते तस्क
राणाम्पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघा
सद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमो सिमद्भ्यो नक्तञ्च
रद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः ॥ २१ ॥ नम ऽउ
ष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो
नम ऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम ऽआ १४

तक्षभ्योरथकारेभ्यश्चवोनमोनम : कुलालेभ्य : कर्मारेभ्यश्चवोनमोनमोनिषादेभ्य : पुञ्जिष्ठेभ्यश्चवोनमोनम : श्वनिभ्योमृगयुभ्यश्चवोनमोनम : ॥ २७ ॥ नम : श्वभ्य :

तन्वानेभ्यं ÷ प्रतिदधानेभ्यश्चवोनमोनमऽ
आयच्छुद्भ्योस्यंद्भ्यश्चवोनमोनमोविसृजद्भ्य ÷
॥२२॥ नमोविसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्चवोनमोनम÷
स्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्चवोनमोनमः शयानेभ्य
ऽआसीनेभ्यश्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्च
वोनमोनम÷सभाभ्य÷ ॥ २३ ॥ नम÷सभा
भ्य÷सभापतिभ्यश्चवोनमोनमोश्वेभ्योश्व

पतिभ्यश्चवोनमोनमऽआव्याधिनीभ्योविवि
ध्यन्तीभ्यश्चवोनमोनम ऽउगणाभ्यस्तृꣳह
तीभ्यं श्चवोनमोनमोगणेभ्य÷॥२४॥ नमो
गणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेभ्यो
व्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सप
तिभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्योविश्वरूपे
भ्यश्चवोनमोनमःसेनाभ्यः ॥ २५ ॥ नमः

सेनाभ्यऽसेनानिभ्यश्च वोनमोनमोरथिभ्यो ऽअरथेभ्यश्च वोनमोनमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्चवोनमोनमोमहद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्चवो नमः ॥२६॥ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्चवो नमोनमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वोनमो नमोनिषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वोनमोनमः श्वनिभ्योमृगयुभ्यश्चवोनमोनमः श्वभ्यः

॥२७॥ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वोनमोन मोभवायचरुद्रायच नमः शर्वायचपशुपतये चनमोनीलग्रीवायचशितिकण्ठायचनमः कपर्द्दिने ॥२८॥ नमः कपर्द्दिनेच व्युप्तकेशा यच नमः सहस्राक्षायच शतधन्वनेच नमो गिरिशयायच शिपिविष्टायच नमोमीढुष्टमाय चे षुमतेच नमोह्रस्वाय ॥२९॥ नमोह्रस्वायच

व्वामुनायचुनमोवृहुतेचुव्वर्षीयसेचुनमोव्वृद्धाय चसुवृधेचु नमोग्ग्र्यायचप्प्रथमायचुनमऽआश वे॥३ ४॥नमऽआशवेचाजिरायचुनमुःशीग्घ्र्या यचुशीब्भ्यायचुनमुऽऊर्म्म्यायचावस्वुन्न्याय चुनमोनादेयायचद्वीप्प्यायच॥३ १॥नमोज्ज्येष्ठा य चकनिष्ठायचुनमः पूर्व्वजायचापरजायचुन मोमद्ध्यमायचापगल्ल्भायचुनमोजघुन्न्यायचु १५

बुध्न्यायचुनमुःसोब्भ्याय॥३ २॥नमुःसोब्भ्या यचप्प्रतिसुर्य्यायचुनमोयाम्म्यायचुक्षेम्म्याय चुनमुःश्श्लोक्यायचावसान्न्यायचुनमऽउर्व्वुर्स्या यचुखल्ल्यायचुनमोव्वन्न्याय॥३ ३॥नमोव्वन्न्या य चुकक्ष्यायचुनमः श्श्रवायचप्प्रतिश्रवायचुन मऽआशुषेणायचाशुरथायचुनमुःशूरायचाव भेदिनेचुनमोबिल्ल्मिने ॥३ ४॥नमोबिल्ल्मिने

चकवुचिनेचुनमोंव्वुम्मिणोचव्वरूथिनेचुनमः
श्रुतायचश्रुतसेनायचनमो दुन्दुभ्यायचाहन
न्यायचनमोधृष्णवे ॥ ३५ ॥ नमोधृष्णवे
चप्रमृशायचनमो निषङ्गिणेचेषुधिमतेचनमः
स्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनमः स्वायुधायचसुध
न्वनेच ॥ ३६ ॥ नमः स्रुत्याय चपथ्यायचन
मः काट्यायचनीप्यायचनमः कुल्यायचस

रस्यायचनमोनादेयायचवैशन्तायचनमः कू
प्याय ॥ ३७ ॥ नमः कूप्याय चावट्यायचन
मोव्वीध्र्यायचातप्यायचनमोमेघ्यायच व्विद्यु
त्यायचनमोव्वर्ष्यायचावर्ष्यायचनमोव्वात्या
य ॥ ३८ ॥ नमोव्वात्याय चरेष्म्यायचनमोव्वा
स्तव्यायचव्वास्तुपायचनमः सोमायचरुद्राय
चनमस्ताम्म्रायचारुणायचनमः शङ्गवे ॥ ३९ ॥

नमः शङ्गवे चपशुपतयेचनमऽउग्ग्रायचभी
मायचनमोऽग्ग्रेवधायचदूरेवधायच नमोहन्त्रे
चहनीयसेचनमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्योनम
स्ताराय ॥४०॥ नमः शम्भवाय। चमयोभव
यचनमः शङ्करायचमयस्करायचनमः शि
वायचाशिवतरायच ॥ ४१ ॥ नमः पार्य्या
चावार्य्यायचनमः प्प्रतरणायचोत्तरणायच

नमस्तीर्त्थ्यायचकूल्ल्यायचनमः शष्प्याय
फेन्न्यायचनमः सिकत्त्याय ॥४२॥ नमः
कित्त्याय चप्प्रवाह्यायचनमः किᳫशिलाय
क्षयणायचनमः कपर्द्दिनेचपुलस्तयेचनम
रिण्यायचप्प्रपत्थ्यायचनमोव्रज्ज्याय ॥४
नमोव्रज्ज्याय चगोष्ठ्यायचनमस्तल्प्प्यायच
गेह्यायच नमोहृदय्यायचनिवेष्प्प्यायचनम

कात्यायचगह्वरेष्ठायचनमुंशुष्क्याय ॥४४॥
नमुंशुष्क्याय चहरित्यायचनमः पाꣳसु
ष्यायचरजुस्यायचनमोलोप्यायचोलप्याय
चनमऽऊर्व्यायचसूर्व्यायचनमः पर्णाय।४५
नमः पर्णायचपर्णशदायचनमऽउद्गुरमाणा
यचाभिघ्नतेचनमऽआखिदतेचप्रखिदतेच
नमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्चवोनमोनमोवꣳकि

रिकेभ्योदेवानाꣳ हृदयेभ्योनमोविचिन्वत्के
भ्योनमोविक्षिणत्केभ्योनमऽआ निर्हतेभ्यः
॥ ४६ ॥ द्रापेऽअन्धसस्पतेदरिद्रनीललोहि
त ॥ आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारो
ङ्मोचनꣳकिञ्चनाममत् ॥ ४७॥ इमारुद्रा
य तवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेम
तीः ॥ यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदेविश्वम्पुष्ट

ङ्गामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥ याते रुद्रशि
वातनूः शिवाविश्वाहाभेषजी । शिवारुतस्य
भेषजीतयानोमृडजीवसे ॥ ४९ ॥ परिनोरुद्र
स्यहेतिर्वृणक्तुपरित्वेषस्यदुर्म्मतिरघायोः ॥ अ
वस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्वमीढ्वस्तोकायतनया
यमृड ॥५०॥ मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुम
नाभव ॥ परमेवृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंव्वसा
नऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि ॥५१॥ विकि
रिद्द्रविलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः ॥ यास्ते
सहस्रंहेतयोन्न्यमस्म्मन्निवपन्तुताः ॥५२॥
सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयः ॥ तासा
मीशानोभगवःपराचीनामुखाकृधि ॥ ५३ ॥
असंङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्द्राऽअधिभूम्याम्॥
तेषाऽंसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥५४॥

अस्मिन्महत्त्यर्णवेन्तरिक्षेभवाऽअधि॥ तेषा
ᳩसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि॥५५॥ नी
लग्ग्रीवाःशितिकण्ठादिवꣳरुद्राऽउपश्रिता
ताः॥ तेषाᳩसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि
॥५६॥ नीलग्ग्रीवाःशितिकण्ठाःशर्वाऽअधः
क्षमाचराः॥ तेषाᳩसहस्रयोजनेवधन्वानित
न्मसि॥५७॥ येवृक्षेषु शष्पिञ्जरानीलग्ग्री

वाविलोहिताः॥ तेषाᳩसहस्रयोजनेवधन्वा
नितन्मसि॥५८॥ येभूतानामधिपतयोविशि
खासः कपर्द्दिनः॥ तेषाᳩसहस्रयोजनेव
न्वानितन्मसि॥५९॥ येपथाम्पथिरक्षयऽऐल
बृदाऽआयुर्युधः॥ तेषाᳩसहस्रयोजनेव
न्वानितन्मसि॥६०॥ येतीर्थानि प्रचरन्ति
सकाहस्तानिषङ्गिणः॥ तेषाᳩसहस्रयोज

वधन्वानितन्नमसि॥ ६१ ॥ येन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति
पात्रेषुपिबतोजनान् ॥ तेषांसहस्रयोजनेवध
न्न्वानितन्न्मसि॥६२॥यऽएतावन्तश्चभूयांᳪ
सश्चदिशोरुद्द्राव्वितस्थिरे॥तेषांᳪसहस्रयोजने
वधन्न्वानितन्न्मसि॥६३॥ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो
येदिवियेषांव्वर्षमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राची
र्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः

तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेय
न्द्विष्म्मोयश्चनोद्द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः॥६
नमोस्तु रुद्द्रेब्भ्योयेन्तरिक्षेयेषांव्वातऽइषवः
तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्द
शोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनो
न्तुतेनोमृडयन्तु तेयन्द्विष्म्मोयश्च नोद्द्वेष्टि
मेषाञ्जम्भेदध्मः॥६५॥नमोस्तु रुद्द्रेब्भ्योये

थिव्यायेषामन्नमिषवः॥तेभ्योदशप्राचीर्दश दक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः॥ ते भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेय न्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः॥६६॥

॥१॥ॐ॥ सहस्रशी र्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ सभूमिꣳ

सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥(६७)॥ पुरुषऽ वेदꣳ सर्वंयद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्व स्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥(६८)॥ एतावानस्य महिमातोज्यायांश्चपूरुषः॥ पादोस्यविश्वाभू तानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥(६९)॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः॥ ततोविष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥(७०)॥ ततोविराड

जायतव्विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअ
रिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥(७१)॥ तस्माद्यः
त्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥ पशूंस्तांश्च
वायव्यानारण्याग्राम्म्याश्चये ॥(७२)॥ तस्मा
ज्ञात्सर्व्वहुतऋचः सामानिजज्ञिरे ॥ छन्दां
सिजज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥(७३)
तस्म्मादश्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः ।

गावोहजज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः
॥(७४)॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्र
तः ॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्चये
॥(७५)॥ यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्ये
ते ॥(७६)॥ ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यः
कृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रो

ऽअजायत ॥(७७)॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः
सूर्य्योऽअजायत ॥ श्श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमु
खादग्निरजायत॥ (७८) ॥ नाभ्याऽआसीदन्त
रिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमि
र्दिशःश्श्रोत्रात्तथालोकाँ २॥ ऽअकल्पयन्
॥(७९)॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ॥
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः

॥ (८०) ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमि
धः कृताः ॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्न
न्पुरुषम्पशुम् ॥ (८१) ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवा
स्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्म
हिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाध्याः सन्तिदेवाः
॥ (८२) ॥

एषते रुद्र भाग॒ःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जु

षस्वस्वाहैषतेरुद्र भागऽआखुस्तेपशुः ॥ (८३)।
अवरुद्र मंदीमह्यवंदेवन्त्र्यम्बकम्॥यथानोव
स्यसस्करद्यथानःश्श्रेयसस्करद्यथानोव्यवस्
ययात् ॥(८४)॥

ॐ नमस्तेरुद्रमुन्नयवऽउतोतुऽइंषवेनम ÷।।
बाहुब्भ्यामुततेनमं ÷ ८५
यातें रुद्रशिवातुनूर घोरापापकाशिनी
तयानस्तन्न्वाशन्त' मयागिरिशंन्ताभिचाकशीहि।। ८६
नतम्व्विंदायुष ऽ इमाजजाना'यद्युष्माकुमन्तरम्बभूवा
नीहारेणुप्प्रावृताजल्प्यांचासुतृप' ऽ उक्थशासंश्च्चरन्ति।। ८७
व्विश्श्वकर्म्मा त्व्यजनिष्ट्टदेवाड आदि द्रन्धर्व्वो ऽ अभव द्वितीय ÷।।
तृतीय ÷ पितोजनितौषधीनामुपाङ्गर्ब्यंध्य दधात्पुरुत्रा।। ८८

मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुम
नाभव॥ परमेवृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंवसा

नऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि॥ (८९)॥ विकि
रिद्रविलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः॥ यास्ते
सहस्रंहेतयोन्यमस्मन्निवपन्तुताः॥ (९०)॥
सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयः॥ तासा
मीशानोभगवःपराचीनामुखाकृधि॥ (९१)॥
असंख्यातासहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्याम्॥
तेषांसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि॥ (९२)॥

ॐव्वयंसो
मव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः। प्रजावन्तःसचेम
हि।९३। एषते रुद्र भागःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जु

षस्वस्वाहैषतेरुद्र भागऽआखुस्तेपशुः ॥ (९४) ॥
अवरुद्रमदीमहयवदेवन्त्र्यम्बकम्॥यथानोव्व
स्यसस्करद्यथानःश्श्रेयसस्करद्यथानोव्यवसा
ययात् ॥(९५)॥ भेषजमसि भेषजङ्गवेश्वायपुरु
पायभेषजम् ॥ सुखम्मेपायमेष्यै ॥(९६)॥ त्र्यम्ब
कंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुक
मिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्र्य

म्बकंयजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥उर्व्वारुक
मिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः ॥(९७)॥ एतत्ते
रुद्रावसन्तेनपरोमूजवतोतीहि। अवततधन्न्वा
पिनाकावसःकृत्तिवासाऽअहिंसन्नःशिवोती
हि॥(९८)॥ त्र्यायुषञ्जमदग्नेःकश्यपस्यत्र्यायु
षम् ॥ यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्
॥ (९९)॥ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽ

अस्तुमामाहिंसीः ॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्य
यप्प्रजननायरायस्पोषायसुप्प्रजास्त्वायसुवी
र्य्याय ॥(१००)॥ अस्त्राय फट्

अथ बौद्धायनोक्त न्यास

ॐ रुद्राय नमः	शिरसि
चन्द्रशेखराय नमः	ललाटे
त्रिलोचनाय नमः	नेत्रयोः
भैरवाय नमः	कर्णयोः
शंकराय नमः	घ्राणे
पशुपतये नमः	मुखे
नीलग्रीवाय नमः	कण्ठे
व्यापकाय नमः	हृदये
गंगाधराय नमः	बाह्वो
शिवाय नमः	नाभौ
वामदेवाय नमः	गुह्ये
त्र्यंबकाय नमः	जंघयो
कालाग्निरुद्राय नमः	ऊर्वयो
कूर्माय नमः	उदरे
भीमाय नमः	कण्ठे
नीलकण्ठाय नमः	ललाटे
शशिभूषणाय नमः	शिरसि
शिवाय नमः	शिखायां
सदाशिवाय नमः	ततो अष्टांग प्रणामं कृत्वा

एवमात्मानं रौद्रीकरणं करोति त्वक्स्थितै पापैः प्रमुच्यते। सद्योरोग प्रमुच्यते। सर्वभूतेश्वपराजितो भवति। यक्षराक्षसगंधर्व भूतप्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस यमदूत शाकिनी डाकिनी सर्वश्वापद स्तस्कराद्युपद्रवाः सर्वेः अतो ज्वलंतुंपश्यंतु। माम् रक्षंतु।

अथात्मानं रुद्र रूपं ध्यायेत–

ध्यानम्–

शुद्ध स्फटिक संकाशं त्रिनेत्रं पंचवक्त्रकम्।
गंगाधरं दशभुजं सर्वाभरण भूषितम्।।
नीलग्रीवां शशांकांकं नागयज्ञोपवीतिनम्।
व्याघ्र चर्मोत्तरीयं च शरण्यमभयफलप्रदम्।।
कमण्डल्वक्ष सूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम्।
ज्वलन्तं पिंगल जंटाजूटमुद्योतकारिणम्।।
अमृतेनाप्लुतं हृष्टमुमादेहार्द्धहारिणम्।
दिव्य सिंहासनासीनं दिव्य भोग समन्वितम्।।
दिग्देवता समायुक्तं सुरासुर नमस्कृतं।
नित्यं च शाश्वतं बुद्धं ध्रुवम क्षरमव्ययम्।।
सर्वव्यापिनिमीशानं रुद्र वै विश्वरूपिणम्।।

एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक्
ततो यजनमारभेत्। इति स्वाभेदेन
देवं ध्यात्वा स्वशिरसि मूलमंत्रेण
पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा पुनर्हृदयकमलेध्यात्वा।
स्वदेहे आवाहनं कुर्यात्-

मानोमुहान्तमुतमानोऽअर्भकम्मान्ऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्।।
मानोव्वधिं पितरम्मोतमातरम्मान ÷ प्प्रियास्तन्वोरुद्द्ररीरिषं ।।

आवाहिता भव।

वक्षमाण योगपीठ पूजा पुरस्मन्। मानसोपचारैः संपूज्य -
मानस्तोकेतनयेमान् ऽ आयुषिमानो
गोषुमानो ऽ अश्श्वेषुरीरिषं ।।
मानोव्वीरान्त्रुद्द्रभामिनोव्वधी
र्हविष्मन्त ं सदमित्त्वाहवामहे।।

इत्यर्चैः देवं सांगं सावरणं सम्पूज्य

लं पृथिव्यात्मकं गंधम् समर्पयामि

हं आकाशात्मकं पुष्पम् समर्पयामि
यं वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि
रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि।
एषते रूद्रभाग ँ सहस्वस्राम्बिकयातज्जुंषस्व
स्वाहैषते रुद्रभागऽआखुस्तें पशुं ।।

इति लिंगमुद्रां दर्शयित्वा।

स्वमूलाधारे आत्मा अन्तरात्मा परमात्मा ज्ञानात्मेति आत्मचतुष्टाकारं चतुरस्रकुण्डमध्ये चिच्छक्तिं कुण्डलिनी वह्निरूपां ध्यात्वा। मूलेन पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, मूलमुच्चार्य, सुषुम्णा स्त्रुक् युत मनः स्रुवेण

''अहंतां जुहोमि स्वाहा''

पुनर्मूलमुच्चार्य, 'असत्यं जुहोमि स्वाहा'
पुनर्मूलमुच्चार्य 'कामं जुहोमि स्वाहा'
पुनर्मूलमुच्चार्य, 'क्रोधम् जुहोमि स्वाहा'
पुनर्मूलमुच्चार्य 'मोहम् जुहोमि स्वाहा',
पुनर्मूलमुच्चार्य 'मदम् जुहोमि स्वाहा'
पुनर्मूलमुच्चार्य 'मात्सर्यम् जुहोमि स्वाहा'

निखिल वैरिगणाः हुत्वा स्थिरचित्तो मूलमंत्रं दशधा जपित्वा, जपं समर्प्य श्रीगुरूं प्रणमेत्।

यंत्रोद्धार–

ततः श्री पुण्यादि पीठे स्वर्णादि रचिते कुंकुमादिद्रव्यैः बिन्दु-षट्कोण-अष्टदल-भूगृहात्मकं शिवस्य पूजाचक्रं विरच्य स्वपुरतो प्रोक्त पीठे संस्थाप्य।

मूलेन पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

ततो पात्राणि स्थापयेत्, तद्यथा–

स्वात्मपीठयोर्मध्ये प्राचीं परिकल्प्य। देवाग्रतः स्ववामे चतुरस्रवृत

त्रिकोणात्मकं मंडलं चंदनानुलिप्ते भूतले मत्स्यमुद्रया निर्माय-

' श्री शिवस्य स्थानीय कलशाधारमंडलाय नमः'

इति मण्डलं संपूज्य।

मूलमंत्रेण प्रक्षालितं आधारं-

' श्री शिवस्य कलशाधारं स्थापयामि',

इति संस्थाप्य,

' मं रं धर्मप्रद दशकलात्मने वह्निमंडलाय शिवस्य कलशाधाराय नमः

इति आधारं संपूज्य।

तत्र स्वर्ण ताम्रादि निर्मितं कलशं मूलेन प्रक्षाल्यः

' श्री शिवस्य स्थानीय कलशं प्रतिष्ठापयामि'

इति तस्मिन् आधारे संस्थाप्य,

" अं हं अर्थप्रद द्वादश कलात्मने सूर्यमंडलाय

शिवस्य स्नानीय कलशाय नमः"

इति कलशं संपूज्य।।

'व्वरूणस्योतंभनमसि वरूणस्य स्कंभ सर्ज्जनीस्थो

व्वरूणस्यत्रृत सदन्यसि वरूणस्यत्रृतसदनमसि

वरूणस्य त्रृतसदनमासीद्।।'

इति मंत्रेण मूलमंत्रम् त्रिर्जपित्वा

' श्री शिवस्य स्नानीय कलशं पूरयामि'

इति पूर्वोक्त कर्पूरादिसुवासित

शुद्धोदकेनापूर्यः।

" ॐ सं कामप्रद षोडशकलात्मने सोममंडलाय

श्री शिवस्य स्नानीय कलाशामृताय नमः।"

इति तज्जलं संपूज्य,

ॐ क्रौं ' गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती

नर्मदे सिंधु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू।"

इति अंकुश मुद्रया सूर्यमंडलात् तीर्थान्यावाह्यः मूलमंत्रेण कलश जले संयोज्य, धेनु मुद्रां प्रदर्श्यः मूलमंत्रेण अष्टवारमभिमंत्र्य, मत्स्यमुद्रया आच्छादयेत्।

इति कलश स्थापनं

तदुत्तर सामान्यार्घ्य शंखं संस्थाप्य-

अथ सामान्यार्घ्य स्थापनम्

शिवस्य शंखेन निषिद्धत्वात् स्वर्णादिपात्रं शंखस्थाने स्थापयेत्।। तत्र प्राग्वत् चतुरस्रवृत त्रिकोणात्मकं मंडलं भूमौ मत्स्यमुद्रया विधाय

'श्री शिवस्य सामान्यार्घ्य मंडलाय नमः'

इति मंडलं संपूज्य, मूलेन प्रक्षालितां त्रिपादिकां-

'श्री शिवस्य सामान्यार्घ्य पात्राधारं स्थापयामि'

इति संस्थाप्य

'मं रं धर्मप्रददशकलात्मने वह्निमंडलाय शिवस्य
सामान्यार्घ्य पात्राधाराय नमः'

इति त्रिपादिकां संपूज्यं, तत्र वितस्तिमान विस्तृतं चतुरंगलोच्छ्रितं स्वर्णादिपात्रे 'फट्' इति प्रक्षाल्यः

'श्री शिवस्य सामान्यार्घ पात्रं प्रतिष्ठापयामि'

इति संस्थाप्य

'अं हं अर्थप्रद द्वादश कलात्मने सूर्यमंडलाय
श्री शिवस्य सामान्यार्घ पात्राय नमः

इति तत्पात्रं संपूज्य, मूलमंत्रं त्रिर्जपित्वा

'श्री शिवस्य सामान्यार्घ पूरयामि'

इति शुद्धोदकेनापूर्यः तत्र मूलेन गंधाक्षतपुष्पं दूर्वा निक्षिप्य

' ॐ सं कामप्रद षोडशकलात्मने सोममंडलाय श्री शिवस्य सामान्यर्घ्यामृताय नमः

इति तज्जलम् संपूज्य। प्राग्वत्

ॐ क्रौं ''गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरू''

इति अंकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात् तीर्थान्यावाहय, मूलेन सामान्यार्घजलं संयोज्य, 'वं' इति धेन्वा-मृतीकृत्य,

मूलेनष्टवारमभिमंत्र्य मत्स्यमुद्रयाऽच्छाद्य

इति सामान्यार्घ स्थापनम्।

अथ विशेषार्घ स्थापनम्

तत्र सामान्यार्घदुत्तरत: पूरित: किंचिद्वामाग्रे चतुरस्रवृत्त षट्कोण त्रिकोणात्मकं मंडलं चंदनानुलिप्ते भूतले मत्स्य मुद्रया विधाय-

"श्री शिवस्यार्घाधार मंडलाय नम:"

इति मंडलं संपूज्य। तत्र पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची कल्पना तदनुसारेण वायव्य नैऋत्य ईशान आग्नेय कोणेषु-

ॐ हृदयाय नम:

नं शिरसे स्वाहा

मं शिखायै वषट्

शिं कवचाय हुम्

इति सम्पूज्य। पुरतो

वां नेत्रत्रयाय वौषट्

इति सम्पूज्य। स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन चतुर्दिक्षु-

यं अस्त्राय फट्

इति षडङ्गानि सम्पूज्य, तत्र मूलमंत्रेण प्रक्षालित पात्राधारं-

श्री शिवस्यऽर्घ पात्राधारं स्थापयामि।

इति संस्थाप्य

मं रं धर्मप्रददशकलात्मने वह्निमंडलाय शिवार्घाधाराय नम:

इति आधारं सम्पूज्य तत्र 'धूमार्चिरादिकलानां प्राणा: इह प्राणा:' इति अग्निकलानां प्राण प्रतिष्ठां विधााय स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन वृत्ताकारेण

यं धूम्रार्चिषे नमः

रं ऊष्मायै नमः

लं ज्वलिन्यै नमः

वं ज्वालिन्यै नमः

शं विस्फुलिंगिन्यै नमः

षं सुश्रियै नमः

सं सुरुपायै नमः

हं कपिलायै नमः

लं हव्यवाहायै नमः

क्षं कव्यवाहायै नमः

इति वह्निकला संपूज्य, अस्त्रमंत्रेण स्वर्ण रजत ताम्र कपाल मृण्मयं नारिकेल शुक्ति बैल्व ब्रह्मवृक्षज रत्नादि यथा संभव षट्त्रिंशदांगुलं उत्तमं, षोडशांगुल चतुर्दशांगुल मध्यमं द्वादशांगुल कनिष्ठं अष्टागुंलद्वारान् कारयेत्। नामं विवर रुपाणि पुंडरीका कृतानि च शंख नीलोत्पलो भानि पत्राणि परिकल्पयेत् प्रक्षाल्य।

'श्री शिवार्घ्य पात्रं प्रतिष्ठापयामि'

इति संस्थाप्य

अं हं अर्थप्रद द्वादश कलात्मने सूर्यमंडलाय श्री शिवार्घ्य पात्राय नमः

इति तत्पात्रं सम्पूज्य, तस्मिन पात्रे भूमिस्थमंडल वनमंडलं विभाव्य तत्र प्राग्वत् षडङ्गानि सम्पूज्य-

ॐ हृदयाय नमः

नं शिरसे स्वाहा

मं शिखायै वषट्

शिं कवचाय हुम्

वां नेत्रत्रयाय वौषट्

यं अस्त्राय फट्

इति सम्पूज्य तत्र सूर्यकला आवाह्य 'सूर्यकलानां

प्राणा: इह प्राणा:। इति तासां प्राण प्रतिष्ठां विधाय वृत्ताकारेण प्रादक्षिण्येन

कं	भं	तपिन्यै नमः
खं	बं	तापिन्यै नमः
गं	फं	धूम्रायै नमः
घं	पं	मरीच्यै नमः
ङ.	नं	ज्वलिन्यै
चं	धं	रुच्चैयै
छं	दं	सुषुम्णायै
जं	थं	भोगदायै
झं	तं	विश्वायै
ञं	णं	बोधिन्यै
टं	ढं	धारिण्यै
ठं	डं	क्षमायै

इति संपूज्य

क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङ घं गं खं कं अः अं औ ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं

इति विलोममातृकांते मूलमंत्रं त्रि: जपन्

'तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात' इति रुद्रगायत्र्या भ्रूमध्यचंद्र मंडलात् बिन्दुस्रुत पीयूष भावनया शुद्धोदकैः-

'श्री शिवस्य अर्घ्यपात्रं पूरयामि''

इति सम्पूज्य। तत्र गंध पुष्पाक्षत यवकुश तिलाग्र सर्षप त्रिदल दूर्वा इत्येतत् अर्घ द्रव्याष्टकं निक्षिप्य।

'ॐ सं कामप्रद षोडश कलात्मने सोममंडलाय श्री शिवस्यार्घामृताय नमः।

इति तज्जलं संपूज्य। तज्जलैः प्राग्वत् भूमिस्थ मंडलं विभाव्य तथैव षडंगै सम्पूज्य। तत्र सोमकलां आवाह्य 'सोमकलानां प्राणा: इह प्राणा:' इति प्राण प्रतिष्ठां

विधााय। तत्र वृताकारेण प्रादक्षिण्येन।

अं अमृतायै नमः
आं आनंदायै नमः
इं पूषायै नमः
ईं तुष्ट्यै नमः
उं पुष्ट्यै नमः
ऊं रत्यै नमः
ऋं धृत्यै नमः
ॠं शशिन्यै नमः
लृं चंद्रिकायै नमः
ॡं कान्त्यै नमः
एं ज्यौत्स्नायै नमः
ऐं श्रियै नमः
ओं प्रीत्यै नमः
औं अंगदायै नमः
अं पूर्णायै नमः
अः पूर्णामृतायै नमः

इति संपूज्य। प्रागवत्

गंगे चे यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

इति सूर्य मंडलात अंकुश मुद्रया तीर्थान्यावाह्य मूलमंत्रेण तदर्घजले संयोज्य। शिखा मंत्रेण गालिनि मुद्रां प्रदर्श्य। गालिनिमुद्रा सूर्यावक्षण मुद्रा इत्यर्थं। तेजोसीति मंत्रांते 'वं' धेनुमुद्रया तत्पात्र मवष्टभ्य। असुवंतं इति मंत्रेण योनिमुद्रया तज्जलं स्पृशन तेजोमयन्नुदीप्य मूलेनं देवं तज्जले गंधादिभिः संपूज्य, प्राग्वत् षडङ्गनि चतुरस्रे संपूज्य। तत्र देवं ध्यात्वा षडंग मंत्रान् देवस्य देहे

हृदयादि विन्यस्य, अवगंठन मुद्रया कवचेन अवगुंठ्य। नेत्र मंत्रेण तज्जलं वीक्ष्य, अस्त्र मंत्रेण दश दिशोः रक्ष्य। शंखमुद्रया तत्पात्रमवष्टभ्यः मूलमंत्रेण अष्टवारमभिमंत्र्य, मत्स्यमुद्रया आच्छाद्य।

इति विशेषार्घ्य स्थापनम्

पाद्य पात्र –

विशेषार्घ्य पात्रस्य उत्तरतः त्रिकोणवृत चतुरस्र मंडलं कृत्वा –

'शिवस्य पाद्य पात्राधार मंडलाय नमः

इति मंडलं संपूज्य आधारं अस्त्रक्षालितं

'शिवस्य पाद्यपात्राधरं स्थापयामि

इति संस्थाप्य, पात्र अस्त्रक्षालितं

तस्मिन् आधारे संस्थाप्य, गंधादिभिः

'मूलमुच्चार्य– शिवस्य पाद्य पात्रं पूजयामि'

इति तत्पांत्र संपूज्य, मूलेन शुद्धोदकेन

शिवस्य पाद्य पात्रं पूरयामि

इति संपूज्य, मूलेन गंधाक्षत पुष्प उसीर श्यामाक त्रिदल दूर्वा विष्णुक्रांता पाद्य पात्रे निक्षिप्य। मूलेन अष्टवारम् अभिमंत्र्य, मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य इति पाद्य पात्रं संस्थाप्य।

आचमन पात्र –

पाद्य पात्रस्य उत्तरतः एवमेव आचमनीय पात्रं संस्थाप्य।

आचमनीय पात्रे जातीफल लंवग कंकोलतमालदलकर्पूर दूर्वा निक्षिप्य। जातिफलादिनी चूर्णितानि दधात्। कंकोल शीतल मिरच इति प्रसिद्धः। इति आचमनीय पात्रं संस्थाप्य।

मधुपर्क पात्र –

आचमनीय पात्रस्य उत्तरतः तथैव मधुपर्क पात्रं संस्थाप्य। तत्र मधुपर्क पात्रं दधिमधुघृतात्मकं कास्य हेम वारौप्यात्मकं।

दधि अभावे पयः, मधुः अभावे गुड। इति मधुपर्क पात्रं संस्था
मधुपर्क पात्रं सजातियेन पात्रेणाच्छादयेदेति

आचमन पात्र –

मधुपर्क पात्रस्य उत्तरतः साधारं सजलं पुनराचमनीय पात्रे जातिफलादिना देयं। इति पुनराचमनीयं पात्रं संस्थाप्य, सम

प्रोक्षणी पात्र –

तदुन्तरतः सजलं साधारं कुश दूर्वा समन्वितं प्रोक्षणी पात्रं पीठ
तथैव पाद्य पात्रवत् स्थापयेद्ध इति पात्र स्थापनं विधाय।

पाद्यादि पात्रेषु विशेषार्घ। जलेन पात्रांतरेण उद्धृत्य किंचित्

किंचित् दधात। प्रोक्षणी उदकेन स्वात्मानं पूजाचक्रं पूजा द्रव्या गंध पुष्पादीनि मूलमंत्रेण प्रोक्ष्य, तेषु धेनु मुद्रां प्रदश्र्य स्वदेहे गंधादिभिरलंकृ स्वेष्टदेवता रूप संचिन्त्य। शिरसि श्री गुरु, मूलाधारे गणपतिं सम्पू योगपीठ देवता तन्यास स्थाने संपूज्य।

हृदये पीठशक्ति नवकं वामादिषु संपूज्य। पीठ मंत्रेण सर्वांगेषु पुष्पांज दत्त्वा। स्वेष्ट देवता रूपं स्वात्मानं ध्यायन् मूलेन मूर्द्धनि हृदयेगुह्य पाद सर्वांगे च पंचस्थानेषु पुष्पांजलिं दत्त्वा, धूपदीप नैवेद्यैराराध्य। अत्र प्राग मूलाधारे चतुरस्रं कुण्डं संचिन्त्य तत्र कुण्डल्यात्मक परमात्म वह्निं संचि सदसत् इंधनेन पंचप्राणैः प्रज्वाल्य मुलमुच्चार्य धर्माधर्म हविः दीप्ते आत्मा मनसा स्रुचा सुषुम्णा वर्त्मना नित्यमक्षवृती जुहोम्यहं।

पुण्यं जुहोमि स्वाहा

पुनर्मूलं प्रागुक्त श्लोकांते पापं जुहोमिस्वाहा।

इत्थं पुण्योपापे कृत्याकृते संकल्प विकल्पौ धर्मं पृथक-पृथक हुत्वा पुनर्मूलं प्रकाशामर्श हस्ता अवलं व्योन्मनी श्रुचं धर्माधर्म कलास्नेहं पूर्ण व करोभ्यहं।

इति धर्माधर्मात्मकं सकल प्रपंचं 'अधर्मं जुहो

स्वाहा' इति पूर्णाहुतित्वेन हुत्वा। निरस्त निखिलोपाधि तया निरतिशय सुखानंद चिद्विलासात्मकं स्वात्मानं ध्यायन्।

प्राणायाम ऋष्यादि न्यास पूर्वकं मूलमंत्र यथाशक्ति जपित्वा जपं समर्प्य। सामान्यार्घोदकेन मूलेन पूजाचक्रमभ्युक्ष्य।

नम स्रुत्यायेतिमंत्रस्य परमेष्ठि ऋषि:, त्रिष्टुप, छंद:, स्रुत्यायथ्यौ देवते पीठ कल्पने विनियोग:।

नम: स्रुत्यायेतिमंत्रमुत्का पीठं परिकल्प्य पीठपूजां कुर्यात्

पीठस्येत्तर भागे – ऐं गुरुभ्यो नम:

पीठस्य दक्षिणभागे – गं गणपतये नम:

इति संपूज्य, पूजा चक्रस्य अधस्तात् अतलादि सप्तपाताल भावनया।

ॐ मण्डूकाय नम:

कालाग्निरुद्राय नम:

मूलप्रकृत्यै नम:

आधारशक्त्यै नम:

कूर्माय नम:

अनन्ताय नम:

वाराहाय नम:

इति संपूज्य, वाराहस्य दंष्ट्रोपार

पृथिव्यै नम:	तस्यां
सुधार्णवाय नम:	तस्मिन्
नवरत्नमय द्वीपाय नम:	तन्मध्ये
स्वर्ण पर्वताय नम:	तदुपरि
नंदनोद्यानाय नम:	तन्मध्ये
कल्पवृक्षेभ्यो नम:	तेषांमध्ये
विचित्र रत्नभूम्यै नम:	तन्मध्ये
स्वर्णप्राकाराय नम:	तन्मध्ये

रत्नमंडपाय नमः तस्यांतम्

स्वर्णवेदिकायै नमः तदुपरि

रत्नसिंहासनाय नमः इति तत्तद भावनया संपूज्य।

पूजाचक्राधार पीठे सिंहासनत्वेन परिकल्प्य तस्यचाग्नेयादि

कोणचतुष्टयस्य पादचतुष्टये –

धर्माय नमः

ज्ञानाय नमः

वैराग्याय नमः

ऐश्वर्याय नमः

इति प्रादक्षिण्येन संपूज्य स्वाग्रादि पीठस्य गात्र चतुष्टये

अधर्माय नमः

अज्ञानाय नमः

अवैराग्याय नमः

अनैश्वर्याय नमः

इति प्रादक्षिण्येन पूजयेत्। ततः सिंहासन मध्ये –

मायायै नमः

विद्यायै नमः

इतिमाया विद्ये पट्टसूत्रमय पट्टिकारूपेण लौकिक मंच उतप्लोत रूपेणग्रतिते स्थिते ध्यात्वा संपूज्य। तदुपरि –

अनन्ताय नमः

इति तल्पाकारमनंतं संपूज्य। तस्यमूर्द्धनि –

पद्माय नमः

आनन्द कन्दाय नमः

संविन्नालाय नमः

तद्दलेषु –

प्रकृतिमय पत्रेभ्योनम:

तत् कर्णिकायां -

षट्त्रिंशत्वर्णबीजाढ्या तत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः

केशरेषु -

अं अर्कमंडलाय नम:

कर्णिकायां -

उं सोममंडलाय नम:

पत्रेषु -

मं वह्निमंडलाय नम:

तत्रैव -

ब्रह्मणे नम:
विष्णवे नम:
रुद्राय नम:

तत्रैव

सं प्रबोधात्मने सत्त्वाय नम:
रं प्रकृत्यात्मने रजसे नम:
तं मोहात्मने तमसे नम:
आं आत्मने नम:
अं अंतरात्मने नम:
पं परमात्मने नम:
ॐ ज्ञानात्मने नम:

इति संपूज्य सिंहासनस्य स्वाग्रादि चतुर्दिक्षु मध्ये च

ज्ञान तत्त्वात्मने नम:
माया तत्त्वात्मने नम:
कला तत्त्वात्मने नम:
विद्या तत्त्वात्मने नम:
परम तत्त्वात्मने नम:

इति संपूज्य, तत्केशरेषु स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन

वामायै नमः

ज्येष्ठायै नमः

श्रेष्ठाये नमः

रौद्रयै नमः

कलविकरण्यै नमः

बलविकरण्यै नमः

बलप्रमथिन्यै नमः

सर्वभूतदमन्यै नमः

मध्ये –

मनोन्मन्यै नमः

इति पीठनवशक्तिः संपूज्य, पुनर्मध्ये

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मक शक्ति युक्ताय अनंतयोग पीठात्मने नम

गंधाक्षत पुष्पैः संपूजयेत्, पूजा विधाय।

तत्र मूल मंत्रमुच्चार्य श्रीशिवस्य मूर्तिं परिकल्पयामि

इति पीठमध्ये शिवलिंगं संस्थाप्य

'शुद्ध स्फटिक संकाशेति' ध्यानोक्तां मूर्ति विभावयेत्। न कल्पितां मूर्ति पूजयेत्। ततः पुनर्मूलमंत्रेण प्राणायाम त्रयं मूलमंत्रस्य ऋष्यादिककां कृत्वा कराभ्यां पुष्पांजलिमादाय पद्ममुद्रां बद्धवा, पूर्वोक्त मातृकां भोजत्वेन ध्यात्वा पद्मासनेनोपविष्टो ऋजुकायोंतमुखो गुद- मेढ्रयोः अंतराले सुषुम्णांतश्चतुर मध्यस्थ चतुर्दल पंकजदलेषु विद्यातत्व वं शं षं सं वर्णचतुष्टयं सकेश पीतवर्णं मूलाधार संचिन्त्य तन्मध्ये सोम सूर्याग्नि मय अकथादित्रिरेख त्रिकोणं विभाव्य तन्मध्ये सुर्यकोटि प्रतीकाशं चंद्रकोटिसुशीतलां जपाकुसुमप्र ज्योतिर्लिंगं ध्यात्वा तदुपरि चिद्रूपां तडितकोटिप्रभा दीप्तं विसतंतु तनीयस प्रसुप्तभुजग्रीव सार्द्ध त्रिवलयेन सर्वांतर्यामितया स्थितां परब्रह्म अविनाभूत कुंडलिनी शक्ति चिरं विभाव्य, गुरुपदिष्ट विधिना गुदा कुंचन पूर्वक हुंकारेण कुंडलिनीं उत्थाय सुषुम्णा वर्त्मना मूलाधार – स्वाधि ष्ठान–मणिपूरक–अनाहत–विशुद्धि आज्ञाख्य षट्चक्र भेदन ब्रह्मरंध्रं नीत्वा।

तत्रस्थ परमपरेतां बुधौ परमात्मनि संयोज्य शिवशक्त्यात्मकं तत्तेज

वहंता साध्वा नि:सार्या। करस्थपुष्पांजलौ संयोज्य मूलमंत्रमुच्चार्य

श्री शिव इहागच्छ

इति पीठ मध्ये स्थितमूर्तेः शिरसि पुष्पांजलि प्रक्षेपेणतत्तेजः आवाह्नी मुद्रयाऽऽबाह्य तत् बह्मरंध्रेण प्रतिष्ठं विभाव्य श्रीशिवरूपेण परिणतं ध्यानोक्त रूपं तं ध्यायन्। आवाहनी मुद्रां प्रदर्श्य। आवाहनी मुद्रा यथासंभव सम्यक संपूरितैः पुष्पैः कराभ्यांरचितांजलिः आवाहनी ध्यात्वा ख्याता मुद्रा देशिक सत्तमैः अनामिकयोः मध्यपर्वणी कृताञ्जलि अंगुष्ठौनियोजयेत् इत्यावाहनी मुद्रा।

मूलमुच्चार्य

'श्री शिव इहतिष्ठ तिष्ठ'

इति स्थापनी मुद्रां प्रदर्श्य। स्थापनी मुद्रा यथापूर्व अधोमुखीकृता। सैव प्रोक्ता स्थापनकर्मणि। ततः

'देवेश भक्ति सुलभः सर्वावरण संयुतः।
यावत्त्वांपूजयिष्यामि तावदत्र स्थिरो भव।।

इति देवं प्राथ्य मूलमंत्रमुच्चार्य

'श्री शिव सन्निधो भव सन्निधो भव'

इति संनिधापन मुद्रया सन्निहितं कुर्यात्। सन्निधापन मुद्रया, यथा अर्गश्लेष्ठमुष्टि युगलौ प्रोन्नतांगुष्ठयुग्मकौ संनिधापन समुद्दिष्टामुद्रेऽयं तत्त्ववेदिभिः।

पुनर्मूलमंत्रमुच्चार्य

'श्री शिव इह सम्मुखो भव'

सम्मुखीकरणमुद्रया सम्मुखीकृत्य। कृतार्जलिकरौ स्वशरीरे समीपे उर्ध्वं नयेत्। इति सम्मुखी मुद्रा।

पुनर्मूलमंत्रमुच्चार्य

'श्री शिव अवगुंठितो भव'

अवगुण्ठन मुद्रया अवगुंठय। अवगुंठन मुद्रा यथा। सव्यहस्ते कृतामुष्टि द्दीर्घो अधोमुख तर्जनी अवगुण्ठन मुद्रेयमभितो भ्रामितामता।

पुनर्मूलमंत्रमुच्चार्य पुष्पेण देवं संस्पृशन् षडङ्गानि देवस्य देहे न्यसेत्

ॐ अं हृदयाय नमः

ॐ नं शिरसे स्वाहा

ॐ मं शिखायै वषट्

ॐ शिं कवचाय हुम्

ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ यं अस्त्राय फट्

'श्री शिव षडंगेन सकलीकृतो भव'

सकलीकृतो भावेति सकलीकृत्य। सकलीकरणं यथा देवतांगे षडंगानां न्यासस्या सकलीकृति। पुनमूल मंत्रमुच्चार्य धेनुमुद्रां बद्धवा देवस्य मूर्द्धनि अमृतवृष्टिं ध्यायन।

'श्री शिव अमृतीकृतो भव'

धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य। यथा अन्योन्याभिमुखे श्लिष्टानामिके पुनः तथास्तर्जनी मध्ये धेनुमुद्रा समीरिता। महामुद्रां बद्धवा मूलमंत्र मुच्चार्य

'श्री शिव परमीकृतो भव'

परमीकृतो भवेदिति देवस्य मूर्द्धनि परमामृतवृष्टिं ध्यायेत्। महामुद्रा यथा अन्यान्य ग्रथितो अंगुष्ठौ प्रसारित परांगुलि। महामुद्रेयमुदिता परमीकरणौ बुधैः।

इत्यावाहानादि नवमुद्रा प्रदर्श्यः, मूलमंत्रमुच्चार्य

'ॐ ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं किलन्ने क्लेदिनि क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु हसौः।''

इति दीपनीकरणम्।

अकारादिक्षकारांत मातृकानुच्चार्य विशेषार्घ्योदकेन देवं त्रिः प्रोक्ष्य देवस्य हृदयं पुष्पेण स्पृशन् प्राण प्रतिष्ठां विधाय।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हों हंसः सोऽहं

श्री शिवस्य प्राणाः इह प्राणाः श्री शिवस्य जीव इह स्थितः श्री शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्रजिह्वाघ्राण प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इति देवस्य प्राणप्रतिष्ठां विधाय मूलमंत्रमुच्चार्य –

श्री शिवाय नमः

इति त्रिः पुष्पांजलि दत्वा लिंग योनि – त्रिशूल अक्षमाला–वराभय–मृग–खट्वांग कपाल डमरूख्या दशमुद्रा। प्रत्येकं कामबीजे विरच्य मूलमंत्रेण प्रदर्श्य 'हुम्' इति मुंचेत्। इति दशमुद्रा प्रदर्श्यः मूलमुच्चार्य।

'श्री शिव एतत्ते आसनं नमः'

इति वार्क्ष्यं चार्मवास्त्रपौष्पं तैजसं यथासंभवमासन देवस्य वामभागे विन्यस्य –

'हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा'

इत्यासनं निवेद्य मूलमंत्रेण पद्ममुद्रां प्रदर्श्य पुनर्मूलमुच्चार्य

'श्री शिवाय नमः'

इति पुष्पांजलि दत्वा, मूलमुच्चार्य –

श्री शिव कुशलं स्वागत मुद्रे प्रदर्श्य

पुनर्मूलमुच्चार्य

श्री शिवाय नमः

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, मूलमुच्चार्य –

'श्री शिव एषते अर्घ्यः स्वाहा'

इति विशेषार्घ्य द्रव्य समन्वितं जलं पात्रान्तरेणोधृत्य देवस्य शिरसि दत्त्वा

'ॐ हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा:'

इति नैवेद्य। अर्घ्यमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन पुष्पांजलिं दत्वा पुनर्मूलमुच्चार्य

'श्री शिव एतत्ते पाद्यं नम:'

इति पाद्य पात्रांत पूर्वोक्त द्रव्य समन्वितं जलं पात्रांतरेणोधृत्य देवस्य पादयो दत्त्वा।

'ॐ हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा'

पाद्य मुद्रां प्रदर्श्य मूलेन पुष्पाञ्जली दद्यात्।

पुर्नमूलमुच्चार्य तत: आचमनीयं पात्राज्जातिफलादियुत जलं पात्रांतरेणोधृत्य, मूलमुच्चार्य -

'श्री शिव एतत्ते आचमनीयं सुधा'

इति देवस्य मुख कमले,

'ॐ हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा'

आचमनीय मुद्रां प्रदर्श्य मूलेन पुष्पाञ्जलि दद्यात्।

पुनर्मूलमुच्चार्य

'श्री शिव एतत्ते मधुपर्क सुधे'

देवस्य मुखकमले दधिमधुघृतात्मकं मधुपर्कं

'ॐ हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा'

मधुपर्कं त्रिवारं दत्वा, मधुपर्कं मुद्रां प्रदर्श्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पुनर्मूलमुच्चार्य देवं सूपज्य। मूलं प्राग्वत् पुनराचमनीय पात्रात

'श्री शिव एतत्ते पुनराचमनीयं सुधा'

इति देवस्य मुख कमले

'ॐ हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा।'

आचमनीय मुद्रां प्रदर्श्य मूलेन पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

तत्र आसनादि पूजा

मूलेन पंचाक्षरेण वा नम: शंभवायेति मंत्रेण कार्या:।

तत: देवंरत्न पादुके उपनीय। पादुकायुगमारुह्य

'भगवन्नत्र निर्मितं स्नान मंडप

मायाहि स्नानार्थ शक्रादि गातंद्व

इति देवं प्रार्थ्य, पूर्वस्यां दिशि विरचित स्नान मंडपं नीत्वा, प्राग्वत्, आसनं दत्त्वा, अर्घ पाद्य - आचमनीयानि प्राग्वत् निवेद्य:। सुगंध तैले सुगंध मलकादि परिकल्प्य।

'श्री शिव एतत्ते सुगंध तैलाभ्यां सुगंधा मलकादि उद्वर्तनादिकं नम:।'

इति तैलाभ्यंग उद्वर्तनादिकं विधाय्

वरुणस्योतम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्ज्जनीस्थो

वरुणस्यऋत सदन्नयसि वरुणस्यऋतसदनमसि वरुणस्य

ऋतसदनमासीद्।।

इति मंत्रेण शुद्धजलै: स्थापयित्वा

पंचामृत स्थापने यथा। पय: पृथित्वां पय इति मंत्रेण

लुशोधक ऋषि: बिराटनुष्टुप, छंद:, रुद्रो देवता पय स्नाने विनियोग।

ॐ पय: - ÷ पृथिव्याम्पय ऽ औषधीषु पयों दिव्यंतरिक्षे पयोधा:।

पर्यस्वती ६ प्रदिश ÷ सन्तुमह्यम्।।

इति पय: स्नानं।।

दधिक्राव्णो इति वामदेव्यो दधिक्राव्णऋषि: अनुष्टुप छंद: रुद्रो देवता दधि स्नाने विनियोग:।

ॐ दधिक्राव्णो ऽ अकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यव्वाजिन:। सुरभिनो मुखाकरत्प्रण ऽ आयू ँ षितारिषत्।।

इति दधि स्नानं।।

घृतं घृत पावान: इति हविरसि स्वाहेत्यंतस्य यजुष: प्रजापति ऋषि:, पंक्ति छंद:, रुद्रो देवता घृत स्नाने विनियोग।

ॐ घृतं घृतपावान: पिबतव्वसांव्वसापावान:

पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।।

दिश: प्प्रदिश: ऽ आदिशो व्विदिश ऽ उद्दिशो दिग्भ्य स्वाहा।।

इति घृत स्नानं।।

मधुवाता: इति ऋक्त्रयेण मधुस्नानं। मधुवाता इति मंत्रस्य गौत ऋषि:, गायत्री छंद:, मधुस्नाने विनियोग।

ॐ मधुव्वाता ऽ ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धव:।
माद्ध्वीर्न्न: सन्त्वोषधी:।।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रज:।
मधुद्द्यौरस्तु न: पिता।।
मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमां ऽऽ अस्तुसूर्य:।
माद्ध्वीर्गावो भवन्तु न: ।।

इति मधु स्नान

अपा ँ रसमिति इन्द्रबृहस्पति ऋषि: अनुष्टुप् छंद:,
सूर्यो देवता शर्करा स्नाने विनियोग।
ॐ अपा ँ रसमुद्द्वयस ँ सूर्य्येसन्त ँ समाहितम्।
अपा ६ रसस्य्यो रसस्तंवो गृहण्णाम्युत्तममुपयाम
गृहीतोसीन्द्रायत्त्वा जुष्टं गृह्ण्णाम्येषते योनि रिन्द्रायत्त्वा जुष्ट्टतमम्

इति शर्करा स्नानम्

ॐ मानस्तोकेतनयेमान ऽ आयुंषिमानोगोषुमानो
ऽ अश्श्वेषुरीरिष ।।
मानोव्वीरान्रुद्द्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्त
सदमित्त्वाहवामहे।।
नम: शंभुवाय चमयोभुवायचनम ÷ शंकराय
चमयस्स्करायचनम ÷ शिवायच शिवतरायच।।

इति मंत्रद्वयेन गंधोदक स्नानं

अभिषेक स्नाने मंत्रा:। यथा

ॐ याते रुद्र।। अस्मिन् महत्यर्णवे. ।। असंख्याता सहस्राणि. ।। त्र्यंबकं ।। मानस्तोके . ।। अवतत्य धनु: . ।। नीलग्रीवाद्दे . ।। नमस्त ऽ आयुधाय .

ये तीर्थानी. ।। नमो वः किरीकेभ्यो. ।। नमो हिरण्यबाहवे.।। इमा रुद्रायतवसे . ।। मानोमहांत . ।। एषते रुद्रभाग. ।। अवरुद्रं. ।। अध्यवोचदधिवक्ता.।। नमो बिल्मिने:।। नमोस्तु नीलग्रीवाय.।। प्रमुंच. ।। य एतावतं. ।। मानस्तोके. ।। नमः शंभवायेति महाराजोपचार।

वन्नानाविधैर्जलैः उक्त मंत्रैर्वा समस्त रुद्रजाप्येन् रुद्रोध्यायेन वा शतरुद्रियेण वा सद्योजातादि पंचमंत्रैर्वा संभवं अविच्छिन्न धारया देवे अभिसिंच्य गंगादि तीर्थादौ अपहृत जलपूर्ण कनक कलश हस्ताभिर्देवकन्याभिषिक्तंमत्वा।।

नम ÷ शंभुवार्य चमयोभुवार्यचुनमं ÷ शंकराय
च मयस्स्करार्यचुनम ÷ शिवाय च शिवतरायच।।

इति स्नानमाचमनीयं दत्त्वा।।

जलापकर्षणार्थं वस्त्रं दत्त्वा अंगप्रोंछनंपरिकल्प्यः।
श्वेतवस्त्रयुग्ममानीय 'वं' इति जलेन अस्त्रमंत्रेण प्रोक्ष्य।
'बृहस्पतिर्देवताभ्यां वासोभ्यां नमः'

इति संपूज्यः

नम ÷ शंभुवार्य चमयोभुवार्यचुनमं ÷ शंकराय
च मयस्स्करार्यचुनम ÷ शिवार्य च शिवतराय च।।

इति उच्चार्य

'श्री शिव एषते कौपीनं परिधापयामि नमः'

एतत्ते उत्तरीय वस्त्रं समर्पयामि नमः। वस्त्र मुद्रां प्रदर्श्य पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।

पूर्ववत् आचमनीयं दत्त्वा। मूलेन कपर्द्दिकाबंधनं विधाय।।

स्वर्णादिनिर्मितं यज्ञोपवीतमानीय
मूलमुच्चार्य
श्री शिव एतत्ते यज्ञोपवीतं नमः

यज्ञोपवीत मुद्रां प्रदर्श्यः। आचमनीयं दत्त्वा ततः पादुका

युगमारुह्य।।

भगवद्रत्न निर्मितं आगच्छ, निर्मितं याम्यामलंकारस्य मंडपं।

इति दक्षिणादिशि अलंकार मंडपं नीत्वा। तत्र सिंहासने उपवेश्य नानविधलंकारणानि समुपनीयं। 'वं' इति अस्त्रेण संप्रोक्ष्य नाना देवतेभ्यो मुकुटाद्याभरणेभ्यो नमः। इति संपूज्य मूलमुच्चार्य

श्री शिव एतत्ते मुकुटे नमः

श्री शिव एतत्ते कुण्डलं नमः

इति नानाभरणानि तत्तन्नाम्ना समर्प्य। आभरण मुद्रां प्रदर्श्य पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, रत्नापादुकेय परिधाय।

ईश याग मंडपम् आयाहि परिवारगणैः सह

इति प्रार्थ्यः प्राकल्पित योग पीठे देवं समुपवेश्य। तत्र छत्र चामरादि नानाविध उपकरण व्यग्रहस्तो परिवार देवतागणं सूर्यात् किरणसमूहमिवदेव शरीराद विनिर्गत्य स्वेस्वेस्थाने समुपविष्टं प्रधानदेवता सदृशाकाराभरणादि शोभितं स्थिरीभूतं परितश्चक्र मध्ये ध्यात्वा।

चंदन कर्पूरादि नानागंधमानीय प्राग्वत्, प्रोक्ष्य

'गंधर्व देवत्याय नमः'

इति सम्पूज्य मूलमुच्चार्य

'श्री शिव एषते गंधो नमः'

इति गंधम् समर्प्य अनामिकया गंध मुद्रा प्रदर्श्य

शरीर तेन जानामि चैष्टा नैवच नैव च

मया निवेदितानांधान्प्रतिगृह्य विलिप्यतां

इति प्रपूज्यः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।।

ततो मंदार चंपक कमल करवीर नाना सुगंध पुष्पाणि

कनक अर्क पुष्पाणि पूर्ववत प्रोक्ष्य मूलमुच्चार्य

श्री शिव इमानि पुष्पाणि तै वौषट्

इति समर्प्य अंगुष्ठतर्जनीभ्यां पुष्पमुद्रां प्रदर्श्य।

नमौ बिल्मिनै चकवचिनै च नमौव्वर्म्मिणै चव्वरूथिनै च नमः ÷ श्रुतायचश्रुत सेनाय च नमौ दुन्दुभ्याय चहनन्न्याय च नमौ घृष्णवे।।

श्री शिव एषते बिल्व पत्राणि नमः

इति बिल्वदलैः देवं संपूज्य।

ततो देवस्य दक्षेसितवर्तियुतं तैलदीपं प्रज्वाल्यः।

देवस्य परितो यथासंभवान्दीपान् प्रज्वाल्य।।

पंचवक्त्र पूजां कुर्यात्। तद्यथा -

पश्चिमवक्त्रं स्पृष्टवा पुष्पेण यजेत्। सद्योजातमितीजमदग्नी त्रिष्टुप् सद्योजातोव्यमिमीतो।। सद्योजातमिति पादाभ्यां पश्चिमवक्त्राय नमः।। इति विन्यस्य पश्चिम वक्त्रे सद्योजातमावाह्य।।

ॐ सद्योजातमिति सद्यऋषिः, गायत्री छन्दः,

ब्रह्मादेवता पश्चिम वक्त्र पूजने विनियोगः।।

ॐ ह्लां धनुषबाण मुद्रा धृत्वा।।

श्वेतवर्णाय हंसवाहनाय पृथिवीतत्त्वाय सृष्टिरूपा ध्यात्मने ब्रह्मणे। ऋध्याष्टकला सहिताय सद्योजात संज्ञाय पश्चिमवक्त्राय नमः।।

इति प्रणम्य।।

मुद्रां विसृज्य, कलां विन्यस्य। तद्यथा।

ऋध्यै नमः

सिद्धयै नमः

धृत्यै नमः

लक्ष्म्यै नमः

मेधायै नमः

कान्त्यै नमः

स्वधायै नमः

धृत्यै नमः

इति कलां कनिष्ठांगुष्ठ योगेन विन्यस्य। मनः शिला चंदनं श्वेताक्षताः श्वेतपुष्पाणि गुग्गुल धूपः घृतदीपं सवस्त्रं पायसनैवेद्यं।।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः।।

इति सद्योजातं संपूज्य कलां पूजयेत्।

ऋध्यै नमः

सिद्धयै नमः

धृत्यै नमः

लक्ष्म्यै नमः

मेधायै नमः

कान्त्यै नमः

स्वधायै नमः

धृत्यै नमः

इत्यादि अष्टकलां संपूज्य ततोध्यानं

ॐ प्रालेयामल बिन्दुकुन्द धवलं गोक्षीर फेनप्रभं।

भस्माभ्यंगमनंग देह दहन ज्वालावलिलोचनं।।

ब्रह्मेन्द्राग्नि मरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभिः।

वन्देऽहं सकलं कलङ्क रहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्।।

इति पश्चिमवक्त्र पूजनम्।

ततः उत्तरवक्त्रं स्पृष्टवा पुष्पाण्यादाय।

वाममद्येति भरद्वाजो ऋषि,

रुद्रो देवताः त्रिष्टुप् छन्दः उत्तरवक्त्र पूजने विनियोग।

वाममद्यो सवितर्वाममस्व श्री वामदेवाय गुह्य वामदेव संज्ञे उत्तरवक्त्रे न्यसेत् उत्तरवक्त्रे वामदेवमावाह्य। वामदेवमिति वामदेव ऋषिः जगती छन्दः, विष्णुर्देवता। उत्तरवक्त्र जपें विनियोग।

ॐ ह्लां पद्ममुद्रां धृत्वा

श्री गरुडवाहनाय गौरवर्णाय आपसतत्त्वाय अमृतरूपात्मने हेमवर्णाय रजः प्रभृति त्रयोदश कला सहिताय वामदेव संज्ञकाय उत्तरवक्त्राय नमः।।

इति प्रणम्यं, मुद्रां विसृज्य, कलां विन्यसेत्

रजसे नमः
रक्षायै नमः
रत्यै नमः
पत्न्यै नमः
काम्यै नमः
संजिवन्यै नमः
प्रियायै नमः
बुध्यै नमः
क्रियायै नमः
धात्र्यै नमः
भ्रामण्यै नमः
मोहिन्यै नमः
ज्वरायै नमः

अंगुष्ठा अनामिकाभ्यां कलां विन्यस्य।।

गोपीचंदन, हरिचंदन तुलसीशतपत्राणि सौगंधिको धूपः (कंकोलपुंग कपूर जातिफल लवंगकैः इति पंचसौगंधिको धूपः) घृतपक्वं गोधुमान्नं नैवेद्यं।।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमो श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।

इति वामदेवं संपूज्य कलां पूजयेत्।

रजसे	नमः
रक्षायै	नमः
रत्यै	नमः
पत्न्यै	नमः

कान्त्यै नमः
संजिवन्यै नमः
प्रियायै नमः
बुद्धयै नमः
क्रियायै नमः
धात्र्यै नमः
भ्रामण्यै नमः
मोहिन्यै नमः
ज्वरायै नमः

इत्यादि त्रयोदश कलां संपूज्य ध्याय

ॐ गौरं कुंकुम पिंगलं सुतिलकं व्यापांडु गंड स्थलं।
भ्रूविक्षेप कटाक्षवीक्षण लसत् संसक्त कर्णोत्पलं ।।
स्निग्धं बिंब फलाधरं प्रहसितं नीलालकालं कृतं।
वंदे पूर्ण शशांक मंडल निभं वस्त्रं हरस्योत्तरम्।।

इति उत्तरवक्त्र पूज

ततः दक्षिणवक्त्र -

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः
सर्वेभ्यो सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

इति हृदये अघोरसंज्ञे दक्षिणवक्त्रे न्यसेत्।।

पुष्पाण्यादाय दक्षिणवक्त्रे स्पृष्टवा।

ॐ जाते रुद्रेति रुद्रो परमेष्ठि ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
प्राजापत्यो रुद्रो देवता दक्षिणवक्त्र अघोरमावाह्य।।

ॐ अघोरेभ्योऽघोरेभ्य इति मंत्रस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप् छन्द कालाग्नि रुद्रो देवता दक्षिणवक्त्र पूजने विनियोगः।।

ॐ हूं इति ज्ञानमुद्रां धृत्वा

कूर्मवाहनाय नीलवर्णाय तेजस् तत्वाय विश्वरूपात्मने अघोर संज्ञाय नमः। अमृत्य अष्टकलासहिताय दक्षिण वक्त्राय नमः।।

इति प्रणम्य मुद्रा विसृज्य कलां न्यसे

तमसे नम:
मोहायै नम:
क्षुधायै नम:
तृषायै नम:
व्याधिरूपायै नम:
मृत्युरूपायै नम:
क्षमायै नम:
निद्रायै नम:

त्रिशूलमुद्रया कलां विन्यस्य।

कृष्णागुरु चंदन नीलोत्पलानि करवीराणि।
पुष्पाणि सितागुरु धूप माषान्नं नैवेद्यं।।
ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य:।
सर्वेभ्यो सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्य:।।

इति अघोरं संपूज्य अष्टकलां पूजयेत्

तमसे नम:
मोहायै नम:
क्षुधायै नम:
तृषायै नम:
व्याधिरूपायै नम:
मृत्युरूपायै नम:
क्षमायै नम:
निद्रायै नम:

इति अष्टकलां संपूज्य अघोरं ध्यायेत्

ॐ कालाभ्र भ्रमरांजनाचलनिभं व्यादीप्त पिंगेक्षणं।
खण्डेन्दुद्युतिमिश्रितोग्रदशन प्रोदभिन्न दंष्ट्रांकुरं।।
सर्वप्रोत कपाल शक्ति सकलं व्याकीर्ण सच्छेखरं।
वन्दे दक्षिण मीश्वरस्य कुटिलं भ्रूभंग रौद्रमुखम्।।

इति दक्षिणवक्त्र पूजनम्।।

ततः पूर्ववक्त्र -

पुष्पाण्यादाय पूर्ववक्त्रं स्पृष्टवा ॐ तत्पुरुषातिमुखे
तत्पुरुषसंज्ञके पूर्ववक्त्रे न्यसेत्। पूर्ववक्त्रे तत्पुरुषमावाह्य।।

ॐ तत्पुरुषेति तत्पुरुष ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता पूर्ववक्त्र जपे विनियोगः।

ततो हैं कवच मुद्रां धृत्वा।

अश्ववाहनाय रक्तवर्णाय वायुस्तत्त्वाय चैतन्यात्म
निवृत्यादि चतुः कला सहिताय तत्पुरुष संज्ञकाय पूर्ववक्त्राय नमः।

इति प्रणम्य, मुद्रां विसृज्य, कलां न्यसेत्।

निवृत्यै नमः
प्रतिष्ठायै नमः
विद्यायै नमः
शान्त्यै नमः

इति उर्ध्वहस्तद्वयं अंगुष्ठतर्जनीयोगात् व्यापक मुद्रया कलां विन्यस्य।

रक्तचंदन अर्कपुष्पाणि दुर्वांकुरै जपा करवीर पुष्पैः
कृष्णागुरु धूपः मोदकनैवेद्यं।
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमही तन्नो रुद्र प्रचोदयात्।

इति पुष्पं संपूज्य, कलां पूजयेत्।।

निवृत्यै नमः
प्रतिष्ठायै नमः
विद्यायै नमः
शान्त्यै नमः

इति कलां संपूज्य, ततो ध्यायेत्

ॐ संवर्ताग्नि तडित प्रतप्त कनके प्रस्पधतेतेजोमयं।
गंभीर स्मित निःसृतोग्रदशनं प्रोद्भासिताम्राधरं।।
बालेन्दुद्युतिलोल पिंगल जटाभार प्रबद्धोरगं।
वंदे सिद्ध सुरा सुरेन्द्र नमितं पूर्वमुख शूलिनं।।

इति पूर्ववक्त्र पूजनं।

ततः ऊर्ध्ववक्त्र -

पुष्पाण्यादाय ईशाने उर्ध्ववक्त्रं स्पृष्ट्वा

ॐ तमीशान गौतम ईशानोः जगती छंदः, रुद्रो देवता

उर्ध्ववक्त्राय नमः। ततः ईशानेति शिरसि।

ईशान संज्ञके उर्ध्ववक्त्रे न्यसेत्।

उर्ध्ववक्त्रे ईशानमावाह्य।

ईशान सर्वविधानां इति मंत्रस्य ईशान ऋषिः अव्यक्ता गायत्री छंदः, सदाशिवो देवता शिवस्य उर्ध्ववक्त्रे जपे विनियोगः।

ॐ ह्रौं व्यापकमुद्रां धृत्वा

वृषभवाहनाय पीतवर्णाय आकाशतत्वाय सर्वव्यापकात्मने अव्यक्ताय चिद्रूपाय शशिन्यादि पंचकलोपेताय ईशान संज्ञकाय उर्ध्ववक्त्राय नमः।

इति प्रणम्य, मुद्रां विसृज्य, कलां न्यसेत्

शशिन्यै नमः

अंगदायै नमः

इष्टायै नमः

मरीच्यै नमः

ज्वालिन्यै नमः

इति पंचकलां लिंगमुद्रया न्यसेत

भस्म चंदन बिल्वपत्रं कनकपुष्पाणि क्रतुभवानी अन्यानि सौगंध पुष्पाणि हरिचंदन सौगंधिकी धूपः शर्करा दध्योदन नैवेद्यं।

ॐ ईशानः सर्व विद्यानामीश्वर सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोधिपति ब्रह्मा शिवोमेऽस्तु सदाशिवोम्।

इतिमंत्रेण ईशानं संपूज्य, कलां पूजयेत्।

शशिन्यै नमः

अंगदायै नमः

इष्टायै नमः

मरीच्यै नमः

ज्वालिन्यै नमः

इति पंचकलां संपूज्य, ततो ध्यायेत्।

ॐ व्यक्ताव्यक्त गुणेतरं सुवदनं षड्विंशतत्वाधिकं।
तस्मादुर्ध्वजवक्त्र मक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः।।
वंदे तामस वर्जितेन मनसा सूक्ष्मच्चसूक्ष्मं परं।
शांतं पंचममीश्वरस्य वदनं खव्याप्ते तेजोमयं।।

इति उर्ध्ववक्त्र पूजनम्।

अष्टात्रिंशत कला न्यस्तः साक्षात् शिवमयो भवेत। सद्यास्ये त्रीणि नेत्राणि वामदेवे तथा शशि।। अघोरास्ये विषंकण्ठे सर्पस्तत्पुरुषे मुखे। ईशाने केवली गंगा केपित्यउर्ध्वमुखे स्थिति। केपिसर्वाणि वक्त्राणि सर्पवंति ब्रुवंतिते। प्रतिवक्त्रं त्रिनेत्रकमिति च। इति पंचवक्त्र पूजा।

तदनु एकादश मूर्तिनां पूजनम्, तद्यथा –

अघोराय नमः
पशुपतये नमः
शर्वाय नमः
विरुपाय नमः
विश्वरूपाय नमः
त्र्यंबकाय नमः
कपर्दिने नमः
भैरवाय नमः
शूलपाणये नमः
ईशानाय नमः
महेशाय नमः

इति एकादश रुद्र पूजनं ततो ''श्री शिव परिवारं देवतापूजनार्थ मनुज्ञां देहि'' इति देवं संप्रार्थ्य, आवरणानि पूजयेत्। तद्यथा

अथ प्रथमावरणार्चनम् (षडङ्ग पूजनम्)

ॐ ॐ हृदयाय नमः	अग्निकोणे
ॐ नं शिरसे नमः	ईशान कोणे
ॐ मं शिखायै नमः	नैऋत्य कोणे

ॐ शिं कवचाय नमः	वायव्य कोणे
ॐ वां नेत्रत्रयाय नमः	मध्ये
ॐ यं अस्त्राय नमः	चतुर्दिक्षु

इति षडंगानि सम्पूज्य सामान्यार्घात्पत्रांतरेण जलमादाय।

'एता षडंगदेवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तिका संपूजिता वरदा सन्तुः'

इति उच्चार्य सामान्यार्घोदकेन समर्प्यः पुष्पाञ्जलिमादाय

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलेन देवं संपूज्य लिंगमुद्रां प्रदर्शनं।

इति प्रथमावरणार्चनम्।।

द्वितीयावरणार्चनम् –

ॐ भगवत्यै नमः
ॐ उमादेव्यै नमः
ॐ शंकरप्रियायै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ कालिकायै नमः
ॐ कटय्यै नमः
ॐ विश्वधारिण्यै नमः
ॐ गंगायै नमः

इति सम्पूज्य सामान्यार्घ पात्रांतरेण गृहीत्वा

'एताः द्वितीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तिकाः संपूजिता वरदा संतुः।

इति उच्चार्य सामान्यार्घोदकेन समर्प्य पुष्पाञ्जलिमादाय

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

इति पुष्पांञ्जलिं दत्त्वा मूलेन देवं सम्पूज्य योनिमुद्रा प्रदर्शनम्।

इति द्वितीयावरणाचर्नम्।

अथ तृतीयावरणार्चनम्

ॐ गणपतये नमः

ॐ स्वामिकुमाराय नमः

ॐ पुष्पदंताय नमः

ॐ कपर्दिने नमः

ॐ महाकालाय नमः

ॐ भृंगरीटये नमः

ॐ स्कंदाय नमः

ॐ चंद्रिने नमः

इति संपूज्य पात्रांतरेण सामान्यार्घ गृहीत्वा

'एताः तृतीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तिकाः संपूजिता वरदा संतुः'

इति उच्चार्य सामान्यार्घ्योदकं समर्पय, पुष्पाञ्जलिमादाय

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या सर्मपये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलेन देव संपूज्य बाणमुद्रां प्रदर्शनं।

इति तृतीयावरणार्चनम्।

अथ चतुर्थावरणार्चनम्।

ॐ आदित्याय नमः

ॐ सोमाय नमः

ॐ भोमाय नमः

ॐ बुद्धाय नमः

ॐ गुरवे नमः

ॐ शुक्राय नमः

ॐ शनैश्चराय नमः

ॐ राहवे नमः

ॐ केतवे नमः

इति संपूज्य पात्रांतरेण सामान्यार्घं गृहीत्वा

एताः चतुर्थावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः

सायुधाः सशक्तिकाः संपूजिता वरदा संतुः।।

इति उच्चार्य सामान्यार्घोदकं समर्पय पुष्पाञ्जलिमादाय-

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।

इति पुष्पांजलिं दत्वा मूलेन देवं संपूज्य कुंडलिनी मुद्रा प्रदर्शनं।

इति चतुर्थावरणार्चनम्।

अथ पंचमावरणार्चनम् -

ॐ नंदिने नमः

ॐ महाकालाय नमः

ॐ भृंगरीटाय नमः

ॐ वृषभाय नमः

ॐ स्कन्दाय नमः

ॐ कपर्दिने नमः

ॐ ऋषिदेवाय नमः

ॐ महादेवाय नमः

- इति संपूज्य पात्रांतरेण सामान्यार्घं गृहीत्वा

एता पंचमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तिकाः संपूजिता वरदा संतुः।

इति उच्चार्य सामान्यार्घोदकं समर्पय पुष्पाञ्जलिमादाय-

अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सल।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलेन देव संपूज्य अथ अभय मुद्रा प्रदर्शनं।

इति पंचमावरणार्चनम्।

अथ षष्ठमावरणार्चनम्

ॐ हेतुक पीठाय नम:

ॐ त्रिपुरांतक पीठाय नम:

ॐ वैताल पीठाय नम:

ॐ कुलांतक पीठाय नम:

ॐ यक्षपीठाय नम:

ॐ तलवासि पीठाय नम:

इति संपूज्य पात्रांतरेण सामान्यार्घं गृहीत्वा

एता: षष्ठमावरण देवता: सांगा: सपरिवारा: सवाहना: सायुधा: सशक्तिका: संपूजिता वरदा संतु:।

इति उच्चार्य सामान्यार्घोदकं समर्पय पुष्पाञ्जलिमादाय

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठभावरणार्चनम्।।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा मूलेन देवं संपूज्य वरदामुद्रां प्रदर्शनं।

इति षष्ठमावरणार्चनम्।

अथ सप्तमावरणार्चनम्

ॐ लं इन्द्राय नम:	पूर्वे
ॐ रं अग्नये नम:	अग्निकोणे
ॐ यं यमाय नम:	दक्षिणे
ॐ क्षं नैऋत्यै नम:	नैऋत्य कोणे
ॐ वं वरुणाय नम:	पश्चिमे
ॐ यं वायव्ये नम:	वायव्य कोणे
ॐ सं कुबेराय नम:	उत्तरे।
ॐ हं ईशानाय नम:	ईशान कोणे
ॐ अं ब्रह्मणे नम:	ईशानपूर्व मध्ये
ॐ ह्रीं अनन्ताय नम:	नैऋत्य पश्चिम मध्ये

इति संपूज्य पात्रांतरेण सामान्यार्घं गृहीत्वा

एता: सप्तमावरण देवता: सांगा: सपरिवारा: सवाहना: सायुधा: सशक्तिका

संपूजिता वरदा संतुः

इति उच्चार्य सामान्यार्घोदकं समर्पय पुष्पाञ्जलिमादाय

"अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।"

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा मूलेन देवं संपूज्या खड्गमुद्रां प्रदर्शनं।

इति सप्तमावरणार्चनम्।

अथ अष्टमावरणार्चनम्

ॐ वज्राय नमः	पूर्वे
ॐ शक्त्यै नमः	आग्नेये
ॐ दण्डाय नमः	दक्षिणे
ॐ खड्गाय नमः	नैर्ऋत्ये
ॐ पाशाय नमः	पश्चिमे
ॐ अंकुशाय नमः	वायव्ये
ॐ गदाय नमः	उत्तरे
ॐ त्रिशूलाय नमः	ईशाने
ॐ पद्माय नमः	ईशानपूर्व मध्ये
ॐ चक्राय नमः	नैर्ऋत्ये पश्चिम मध्ये

इति संपूज्य पात्रांतरेण सामान्यार्घ गृहीत्वा

"एताः अष्टमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तिकाः संपूजिता वरदा संतु।"

इति उच्चार्य सामान्यर्घोदकं समर्पय पुष्पाञ्जलिमादाय।

"अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।"

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा मूलेन देवं संपूज्य

इति अष्टमावरणार्चनम्।

अथ नवमावरणार्चनम्

ॐ ऐरावताय नमः	पूर्वे
ॐ मेषाय नमः	आग्नेये

ॐ महिषाय नमः	दक्षिणे
ॐ कौशिकाय नमः	नैऋत्ये
ॐ मकराय नमः	पश्चिमे
ॐ मृगाय नमः	वायव्ये
ॐ अश्वाय नमः	उत्तरे
ॐ वृषभाय नमः	ईशाने
ॐ हंसाय नमः	पूर्व ईशान मध्ये
ॐ कूर्माय नमः	पश्चिम नैऋत्ये मध्ये

इति संपूज्य पात्रांतरेण सामान्यार्घं गृहीत्वा

"एताः नवमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तिकाः संपूजिता वरदा संतुः।"

इति उच्चार्य सामान्यार्घोदकं समर्पय पुष्पाञ्जलिमादाय

"अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।"

इति पुष्पांजलिं दत्वा मूलेन देवं संपूज्य कपाल मुद्रा प्रदर्शनं।

इति नवमावरणार्चनम्॥

अथ दशमावरणार्चनम् –

ॐ अनन्ताय नमः	पूर्वे
ॐ महेश्वराय नमः	आग्नेये
ॐ शिवाय नमः	दक्षिणे
ॐ उत्तमाय नमः	नैऋत्ये
ॐ एकनेत्राय नमः	पश्चिमे
ॐ द्विनेत्राय नमः	वायव्ये
ॐ त्रिनेत्राय नमः	उत्तरे
ॐ रुद्राय नमः	ईशाने

इति संपूज्य पात्रांतरेण सामान्यार्घं गृहीत्वा

"एता दशमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः सशक्तिकाः संपूजिता वरदा संतुः।"

इति उच्चार्य सामान्यार्घोदकं समर्पय पुष्पाञ्जलिमादाय

''अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल,
भक्तया समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्।''

इति पुष्पांजलिं दत्वा मूलेन देवं संपूज्य, डमरू मुद्रां प्रदर्श्य।

इति दशमावरणार्चनम्।

ततो वामावर्तेन अष्टमूर्तिः पूजनं, तद्यथा -

ॐ शिवाय क्षितिमूर्तये नमः
ॐ भवाय जलमूर्तये नमः
ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः
ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः
ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः
ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः
ॐ ईशानाय सोममूर्तये नमः
ॐ पशुपतये आत्ममूर्तये नमः

इति अष्टमूर्तिं संपूज्य मूलमुच्चार्य

'सांगाय सावरणाय सवाहनाय सायुधाय श्री साम्बसदाशिवाय नमः।'

इति त्रिपुष्पाञ्जलिना देवं संपूज्यः ततो अनन्यभक्त्या
प्रसन्नचित्तो स्वाभेदेन देवं ध्यायेत्, तद्यथा -

त्रिलोचनं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्।
नागयज्ञोपवीतं च व्याघ्रचर्मोत्तरीयकम्।।
वृषस्कंद समारूढ़ं उमा देहार्धधारिणं।
अमृतेनल्पुतं शातं चद्रार्धकृतशेखरम्।।
शुद्ध स्फटिक संकाशं जटामुकुट मंडितम्।
शाश्वतं सच्चिदानंद ध्रुवमक्षरमव्ययम्।।
वरदाभय हस्तं च सर्वकाम फलप्रदम्।
एवं रुद्र तनौर्सर्वे यक्षराक्षस पन्नगा।।
शाकिनी डाकिनी भूत पिशाचाद्या भ्रुकाग्रहाः।
ज्वलंतं ते प्रणश्यंति प्रलयानिल संभवम्।।

एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक अनंगांगहरं हरं। इति ध्यात्वा
ततो धूपादिभिर्यजेत् तद्यथा –

फट् इति मंत्रेण धूपभाजनं संप्रोक्ष्यः, नमः इति मंत्रेण धूपभाजनं गंधादि –भिरभ्यर्च्य। तत्र

सांगारन्निधाय वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य।

'ॐ क्लीं सुरभितेजसे स्वाहा'

इति मंत्रेण गुग्गुल कृष्णागुरु उसीर सिताज्य
मधुचंदनैयुक्तं धूपं निक्षिप्य

'गंधर्व दैवताय नमः'

इति धूपं संपूज्य मूलमुच्चार्य

'ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यो धूपउत्तमः आघ्रेय सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिग्रह्यताम्।।

इति धूपमुत्सृज्य।

स्ववाम भागे घंटां निधाय फट् इति मंत्रेण प्रोक्ष्यः। फट् इति मंत्रेण।

"घंटायै नमः"

इति त्रिरभ्यर्च्यः

"ॐ जय ध्वनि मंत्र मातः स्वाहा।"

इति घंटा मंत्रेण तां त्रिभिः मंत्र्य वामकरेण तां घंटां वादयन्

'ॐ हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा सांगाय सावरणाय श्री शिवाय नमः।'

इति मंत्रेण नीचैः धूपं निवेद्य। धूपभाजनं देवस्य
वामभागे साधारे निधाय, धूपमुद्रां प्रदर्श्य।

मूलेन देवं संपूज्य दीपग्राहिण्या गोघृत तिलं स्नेहं वा निक्षिप्यः। तत्र कर्पूरेण
गार्भणीं वर्ति निधाय ह्रौं इति प्रज्वाल्य।

विष्णुदैवत्याय तैलदीपाय नमः

इति संपूज्य।

वं इति धेन्वामृतीकृत्य मूलमुच्चार्यः

'सप्रकाशो महादीप सर्वत्र तिमिरापहं
सबाह्यभ्यंतरं ज्योति दीपोजयं प्रतिगृह्यताम्'

इति उच्चार्य।

श्री शिव एषते दीपो नमः

इति दीपमुत्सृज्य प्राग्वत् घंटां वादयन् देवस्य पादादिमूर्द्धांतं दीप उच्चैः प्रदर्श्य घृतदीपं देवस्य दक्षिणभागे तैलदीपं देवस्य वामभागे साधारे निवेश्य। दीपमुद्रां प्रदर्श्यः।

मूलेन देव संपूज्य देवस्य पाद्याचमनीये दत्वा स्वर्णादि पात्रे भक्ष्यः, भोज्य, लेहय, चोष्य, पेयात्मकं - पंचविधमन्नं कटु-अम्ल-लवण-तिक्त-कषाय-मधुरात्मक षडरसोपेतं नानाविधव्यंजन सहितं नैवेद्यमानीय विष्णु दैवत्याय नैवेद्याय नमः। इति संपूज्य देवस्य पुरतः चतुरस्रमंडले साधारं तत्पात्रं निधाय, मूलेन प्रोक्ष्य। फट् इति मंत्रेण प्रोक्ष्णी जलेन प्रोक्ष्य, तेनैव कुशैः संताड्य, कवचमंत्रेण अभ्युक्ष्यः। अधोमुख दक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामहस्तं निधाय।

'यं' इति वायुबीजेन अष्टवारमभिमंत्र्यः नैवेद्यगत स्पर्शादि दोषान् शोषयित्वा। पुनर्वामस्योपरि दक्षिण करं प्राग्वन्निधाय अधोमुख वामहस्तेन छादयन्। 'रं' इति वह्निबीजं अष्टवारं जपन तत् दग्धदोषान् दग्धां।

धेनुमुद्रां प्रदर्श्य। वं इति अमृतबीजं अष्टधा जपन् नैवेद्यममृतीकृत्य अस्त्रमंत्रेण नैवेद्यस्योपरि चक्रमुद्रां दर्शयन् तत्संरक्ष्य। मूलमंत्रेण अष्टवारं अभिमंत्र्य, दक्षिण हस्ते जलमादाय -

'हेमपात्रगतं दिव्यं परमानन्नं सुसंस्कृतं।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरः।।

इति नैवेद्यस्योपरि चुलुकोदकं निक्षिप्यः मूलमुच्चार्य

'श्री शिव एतत्ते नैवेद्यं नमः'

इति उत्सृज्य कराभ्यां तत्पात्रं स्पृशन्

'ॐ हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा'

इति मंत्रेण नैवेद्यं पात्रांतरे धेनुमुद्रया जलममृतीकृत्य

देवस्य दक्षिणे तज्जलं किंचित् दत्त्वा।

'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'

इति देवं आचमयित्वा वामहस्तेन विकचोत्पल सन्निभांग्रासमुद्रया दर्शयन्।

ॐ प्राणाय स्वाहा दक्षकनिष्ठा अनामिका अंगुष्ठ योगेन।

ॐ अपानाय स्वाहा मध्यमा अनामिका अंगुष्ठ योगेन

ॐ व्यानाय स्वाहा तर्जनी अनामिका अंगुष्ठ योगेन

ॐ उदानाय स्वाहा तर्जनी मध्यमा आनामिका अंगुष्ठ योगेन

ॐ समानाय स्वाहा पंचांगुलिभिः।

इति प्राणादि पंचमंत्रैः पंचमुद्राभिः पंचग्रासानग्राहयित्वा।

स्वर्णादिपात्रे जलं धेनु मुद्रया अमृतीकृत्य।

नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम

अन्यानिवेदितं शुद्धं प्रकृतिस्थं सुशीतलं

परमानंद संपूर्णं गृहाण जलमुत्तमम।

इति देवस्य वामभागे जलं निवेद्यः।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा, फट् इति मंत्रेण दिग्बंधनं कुर्यात् देवस्य परितो यवनिकांविभाव्यः अवात्मकं नैवेद्यं नमः। इत्यंगुष्ठानामिका योगरूपां कर द्वयेन नैवेद्य मुद्रां प्रदर्श्यः देवं भुञ्जानं ध्यायेत, यथा।

ब्रह्मेन्द्राद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समंतात्।
देव्या सिंघजछ्लय करया सादरं बीज्यमानः।।
नर्मक्रीड़ा प्रहसन परा हासयन पंक्ति भोजयान्।
भुक्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान् देव देवः।।

इति ध्यात्वा। मूलमंत्रं दशधा जपित्वा जपं समर्पय। मूलमंत्रेण पुष्पांजलित्रयं दत्वा।

पूजा चक्रस्य ईशानकोणे चतुरस्र वृत्त त्रिकोण मंडल कृत्वा साधारं सव्यंजनान्नोदकपूरितं ताम्रपात्रं निधाय -

'सर्वभूतानि इह आगच्छ इह तिष्ठ'

इत्यावाह्य

'सर्वभूतेभ्यो नमः'

इति पुष्पादिभिः संपूज्य -

ये रौद्रो रौद्रकर्माणो रौद्रस्थान निवासिन।
योगिन्योह्युगुरुपाश्च गणानामधिपाश्चये।।
भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः।
सर्वेते प्रीतमनसोभूता गृह्णं त्विमं बलिम्।।

इति वामकरांगुलिभिः अर्घपात्रात् पात्रांतरेणोधृत जलधारां बलिपात्रे निक्षिप्य। बलिमुत्सृज्य। पुष्पाञ्जलिं आदाय।

भूतानि यानिहवसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तं संतोष मासाद्य व्रजंतु सर्वे क्षेमं तुतान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः।।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा, प्रणम्य। यथा सुखं विहरंतु भूतानिति नाराचमुद्रया भूतानि विसृज्य।

अस्त्रमंत्रेण शुद्धजलैः स्वात्मानं प्रोक्ष्य, दैव तृप्तं ध्यात्वा पात्रांतरे वं इति धेनुमुद्रया जलममृतीकृत्य।

'अमृतापिधानमसि स्वाहा'

इति देवाय उत्तरापोशनं दत्त्वा। नैवेद्यं गत सारं उद्धृत्य नैऋत्यां नैवेद्य पात्रं निधाय। गोमयाद्भिः अस्त्रमंत्रेण तत्स्थानं शोधयित्वा। तस्मात् किंचिच्छेषमादाय निर्माल्यः। 'भोजिने नमः' इति ईशान्यां निक्षिप्य हस्तं प्रक्षाल्य।

देवाय कर शोधनार्थं सुगंध चूर्णादिकं कर प्रक्षालनाय दत्त्वा। करं प्रक्षालयित्त्वा हस्तशोधनार्थ कपूर सकलानिदत्त्वा, पुनः गण्डूष जलं दत्त्वा। पादौ प्रक्षाल्यः प्राग्वत् आचमनीयं दत्त्वा। शुष्कवस्त्रेण हस्तौ-पादौ प्रोच्य। सुगंध चूर्णादिभि करौ सुरभितौ कृत्वा ताम्बूलमादाय। मूलं उच्चार्य तमालदल कपूर पूंगभागत रंजितं संशोधितं सुगंधं च तांबूल प्रतिगृह्यताम् -

'श्री शिव एतत्ते ताबूलं नमः'

इति तांबूलं समर्पय

'ॐ हं हं हं इदमिदमिदं गृहाण स्वाहा'

इति निवेद्य मूलमंत्रमुच्चार्य

'सुप्रसन्नाय श्रीशिवाय नमः'

इति त्रिः पुष्पाञ्जलिना देवं संपूज्य पुनः मूलमुच्चार्य।

'सुप्रसन्नाय श्रीशिवाय एषते गंधो नमः'

एवं गंध पुष्प धूप दीपै राधयेत्। इति प्रसन्न पूजां कृत्वा, मुकुटं परिधाय आदर्शं दर्शयित्वा छत्र चामर व्यंजनादि नानाविध राजोपचारान परिकल्प्यः।

दूर्वाक्षत पवित्राण्यादाय मूलमुच्चार्य

'श्री शिव एतत्ते नीराजनं नमः'

इति देवस्य मुकुटोपरि दूर्वाक्षतादिकं विनिक्षिपेत्।

ततः कांस्यादि वृहत्स्थाल्यां चंदनादिना अष्टदलकमलं कृत्वा तन्मध्ये अष्टदलेषु पिष्ट मयान्न वदीयान् घृतपूर्णान् कर्पूरगर्भवर्ति सहितान निक्षिप्य। 'ॐ ह्रां' इति प्रज्वाल्य क्वचित् चतुरस्र मंडले निधाय। 'ॐ वं' इति धेन्वामृतीकृत्य, अस्त्रमंत्रेण चक्रमुद्रया संरक्ष्य।

"श्री ह्रौं ग्लूं स्लूं रुलूं प्लूं म्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं"

इति रत्नेश्वरी विद्याया मूलेन पृथक-पृथक अभ्यर्च्यः। तत्पात्रं कराभ्यामादाय मूलमुच्यरन्। देवस्य चरणान् मूर्द्धादि चरणांतं पुनर्पुनर्भ्रामयन्। नवकृत्वो नीराजयेद् इति नीराजनम्। ततः प्रणम्य।

मूलेन प्राणायाम ऋष्यादि न्यासान्विधाय, माला संपूज्यः। हृदिः देवं भावयन मूलमंत्रं यथाशक्ति जपित्वा। पुनः प्राणायामदिकं कृत्वा जपमालां शिरसि निधाय, अर्घोदकमादाय।

"ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्वा त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं।
सिद्धि र्भवतु में देव त्वतप्रसादात्वयि स्थितः।।"

इति देवहस्ते उदकदानेन जपं समर्प्यः।

जपमालां संपूज्य रहस्तिं निधापयेत्।

इत्थं जपं विधाय घंटावादन पूर्वकं
शिव सहस्रनाम शतनाम स्तोत्रदिभिः
देवं स्तुत्वा, प्रदक्षिणा कुर्यात्।

यथा – सव्य व्रजेत ततो सव्यं प्राणालं नैवलंघयेत्।
एकीभूतमनारुद्रेयः कुर्या त्रिः प्रदक्षिणां।।
छिन्नस्तेन भवग्रंथि र्मतस्य पुनरुद्भवः
इति प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कारै परितोष्यः।
यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलं
निवेदितं च नैवेद्यं तदगृहाणानुकम्पया।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्
पूजार्चा न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरः।।
कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्यागतिर्मयः।
अंतश्चारेण भूताना इष्टा त्वं परमेश्वर।।
नथयोनि सहस्रेषु येषुयेषु व्रजाम्यहम।
तेषुतेष्वचला भक्तिः रव्ययास्तु सदा त्वयि।।
देवो दाता भोक्ता च देवं सर्वमिदं जगत्।
देवो यजति सर्वत्र यो देवः सोहमेवहि।।

इति कृताञ्जलि प्रार्थ्यः पुनः पुनः प्रणम्य स्वइष्टार्थ प्रार्थनां कृत्वा। अर्घपात्र समुद्धत्य

"साधुवाऽसाधुवा कर्म यद्यदाचरितं मया
तत्सर्वं भगवान शंभो गृहाणाराधनं परः"

इति कृतं आराधनं किंचित अर्घोदक दानेन समर्प्यः। पुनः प्राग्वत् अर्घोदकं दत्वा तत्पात्रं स्वस्थाने निवेश्य पुष्पाञ्जलिमादाय।

ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धि देह धर्माधिकारतो।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था सुमनसा वाचा।।
कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्नायत्स्मृतं।

यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्री शिवाय समर्पितमस्तु।।

इति देवस्य पादयो: पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा प्रणम्य। पुन: पुष्पाञ्जलिं आदाय मूलमुच्चार्य :-

"रश्मिरूपा महेशस्य पूजितायाश्च देवता:
श्री शिवांगे विलीनास्ता: संतु सर्व सुखावहा:"

इति पुष्पाञ्जलिं निक्षिप्य। आवरण देवता: देवस्यांगे विलीन इति विभाव्य:। देवतां तेजोरूपां विभाव्य।

'श्री शिवस्य क्षमस्व'

इति तालत्रयं दत्त्वा, संहार मुद्रां बद्धवा

"ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वर: यत्र ब्रह्मादयो देवान विदु: परमं पदम्।"

इति पठित्वा निर्माल्य पुष्पेण सहतत्तेज: समुद्धृत्य आघ्राय नासाध्वनातत्तेजो ब्रह्मरंध्रं नीत्वा सुषुम्णा मार्गेण हृदय कमले आनीय।

"ॐ तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वर:
यत्र ब्रह्मादय: सर्वेसुरा तिष्ठन्ति मे हृदि:"

इति स्वहृदि संस्थाप्य, यथोक्तं देवं ध्यात्वा। मानसोपचारै: संपूज्य स्वाभेदेन ध्यायन्।। ऋष्यादिकान् स्मृत्वा प्राणानायम्य।।

ईशाने चतुरस्रवेष्टितं त्रिकोण मंडलं कृत्वा

चंडेश्वर्यै नम:

तेजश्चंडाय नम:

मध्ये - चंडेश्वराय नम:

इति देवस्य निर्माल्य:।

पुष्पादिकं निक्षिप्य। नैवेद्य

शेषं किञ्चित् आदाय। लेह्य चोष्य अन्नपानानि 'तांबूलं स्रग्विलेपनं। निर्माल्य भोजिने तुभ्यं ददामि श्री शिवाज्ञया।

इति तत्रैव ईशान्यां दिशि पूर्वोक्त मंडले निक्षिप्य:। करं प्रक्षालयेत्।

पूजावशिष्टं गंधं किञ्चित् स्ववामकरे निधाय तन्मध्ये अर्घपात्रोदकं किञ्चिन्निक्षिप्य, आलोड्य मूलमंत्रेण अष्टवारमभिमंत्र्य। तेन जलेन स्वात्मानं प्रोक्ष्य। मूलमंत्रेण निर्माल्य पुष्पं स्वशिरसि निधाय। मूलेनैव चरणोदकं प्राश्य।

नैवेद्य शिवभक्तेभ्यो विभज्य स्वयमपि भुक्त्वा श्रीशिवरूप सुखं विहरेत।

अत्र स्कंदपुराणे शिव निर्माल्य धारणं। तन्निवेदित भक्षणं च तद्भुक्तै: कर्तव्यमिति उक्तत्वात् अवश्यं कार्यम्। यन्तु शिव निर्माल्य:। धारण नैवेद्य भक्षणादौ निषेधवचनं। तत् अश्रुचिपरं। अत्र अशुचि अपवित्रो अनधिकारो वा तथाच बाणलिंगे स्वयंभूते चंद्रकान्ते च मृण्मये। सोमयज्ञ फलं पुंसां शंभो: नैवेद्यं भक्षणात्।

(स्कान्दे)।। निर्माल्य मस्तके धार्य्य: मूलमंत्रेण मंत्रिण: प्रश्य प्रादोदकं देवी नैवेद्यं विभजेत प्रिये।। तद्भक्तेभ्यो स्वयं भुक्त्वातन्मयो विहरेत सुखम् ब्रह्महापि शुचिर्भूत्वा निर्माल्यं यस्तु धारयेत्।। तस्यपापं महत् शीघ्रं नाशायिष्ये महाव्रते लिंगस्तपनोदक पानेन मूर्द्धनि अभिषेचनात्।। त्रिविध ताप प्रणाशनं गंगास्नान फलम्।।

इति प्रदोष पूजा प्रयोग समाप्तिः

प्रकाशक-
श्री पीताम्बरा श्री स्वामी शक्ति पीठ
ग्राम विजयपुरा, आगरा रोड, जयपुर (राज.)

मुद्रक-
शिवशक्ति प्रेस प्रा. लि.
नयागांव, ग्वालियर रोड, झाँसी (उ.प्र.)
फोन नं. २४४१०९२